ज्ञानामृत

वर्ष 49, अंक 9, मार्च 2014 (मासिक),
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

1.विजयवाड़ा- 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एन.टी.आर.स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.आई.वेंकटेश्वर राव, बहन मोरीन चेन, विधायक भ्राता वी.श्रीनिवास, भ्राता निज़ार जुमा, ब्र.कु.सविता बहन, ब्र.कु.शान्ता बहन तथा अन्य। **2.विशाखापट्टनम-** 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए वरुण ग्रुप के सी.एम.डी.भ्राता प्रभुकिशोर, ब्र.कु.कुलदीप बहन, किसान-खेत मजदूर कांग्रेस की राज्य सह-अध्यक्षा बहन टी.विजयलक्ष्मी, भ्राता निजार जुमा, ब्र.कु.सन्तोष बहन तथा अन्य।

1.करनाल (सेक्टर-7)- मारिशस के उप-प्रधान मन्त्री भ्राता अनिल बेचू तथा श्रीमती बेचू को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रेम बहन तथा ब्र.कु.मेहरचन्द भाई। **2.काठमाण्डू-** नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री भ्राता माधव कुमार नेपाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राज बहन। **3.बकतरा-** म.प्र.के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन। **4.कुल्लू-** हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र सिंह को आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु.सत्यवीर भाई। साथ में ब्र.कु.किरण बहन तथा अन्य। **5.मुजफ्फरपुर-** बिहार के मुख्यमंत्री भ्राता नितिशकुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.वंदना बहन तथा ब्र.कु.मधु बहन। **6.नवसारी-** 'तनाव मुक्ति' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.गोविन्द भाई, कृषि यूनिवर्सिटी के कुलपति भ्राता पाठक जी, डा.गिरीश पटेल, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य। **7.कोचो-** 'शान्ति तथा सद्भावना' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, पिछड़ा वर्ग राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष भ्राता वी ईश्वरय्या तथा अन्य। **8.इंदौर (ओमशांति भवन)-** ज्वेलर्स के लिए आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सर्राफा व्यापारी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष भ्राता अविनाश शास्त्री, ब्र.कु.वेदप्रकाश भाई, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु.हेमलता बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से ..

नारी का पतन और उत्थान

आज के समाज का सबसे बड़ा अभिशाप यही है कि नारी के गर्भ से जन्म लेने वाला नर, माँ को पूज्य समझने वाला नर-समाज, नारी-शरीर को भोग-दृष्टि से देख रहा है। नारी का सबसे बड़ा अपमान यह है कि पुरुष-समाज उसे भोग विलास का साधन समझ उसके साथ मनचाही रीति से अमानुषिक व्यवहार कर रहा है। उस खेल को एक व्यापार समझ, नारी को उस खेल का खिलौना समझ उसका क्रय-विक्रय कर रहा है। नारी का नग्न और अर्धनग्न रूप, नाइट क्लब, कैबरे तथा अनेक ऐसे स्थानों में व्यापारिक रूप से प्रदर्शित किया जा रहा है। पशुओं के माँस के सदृश्य नारी के माँस का खुलेआम क्रय-विक्रय हो रहा है। नारी का शील, भरे बाज़ार में पैसे में बिक रहा है। सिनेमा में नारी के इस विकृत रूप को उभारा जा रहा है। व्यापारिक विज्ञापनों में, व्यापारिक प्रतिष्ठानों के साइनबोर्डों पर, उपन्यास और पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ पर नारी को इसी अपमानजनक रूप में बेरोक-टोक प्रस्तुत किया जा रहा है। 'विवाह' को पुरुष-समाज एक ऐसा अधिकार पत्र समझता है जिसमें वह नारी की इच्छा, अनिच्छा, स्वास्थ्य आदि किसी भी प्रतिबन्ध से मुक्त उसके शरीर के साथ मनचाहा खिलवाड़ कर सकता है।

बड़े खेद की बात है कि नारियाँ न केवल इस अपमान का प्रतिरोध ही नहीं करतीं बल्कि वे स्वयं अपने शरीर का प्रदर्शन भी इस रूप में करती हैं कि वे पुरुषों में आकर्षण पैदा कर सकें। आज नारियों के वस्त्र भी इस प्रकार हैं कि उनके शरीर के अधिक से अधिक अंग अथवा शरीर का माँस ग्राहकों की दृष्टि से छूता रहे। ऐसा लगता है जैसे वह स्वयं ही अपने माँस का जाने अथवा अनजाने व्यापार कर रही हो जिसे हम देखने वाले भी नारी का अपमान समझते हैं उसे नारियाँ स्वयं अपना सम्मान मान रही हैं, इस विचारधारा में क्राँतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है।

नारियों को अपनी शक्ति पहचानना आवश्यक

नारियों को पुरुषों के समान दर्जा तो क्या परन्तु काम-चलाऊ सम्मान तब तक समाज में नहीं मिल सकता जब तक उनमें अपने निज अस्तित्व के विषय में एक नव-चेतना जागृत नहीं हुई है। नारी को यह समझना चाहिये और अपनी समझ के आधार पर पुरुष समाज को समझाना चाहिए कि वह चिकनी खाल-चढ़ा खिलौना नहीं वरन् एक शक्ति है। ऐसा तो भावनात्मक आधार पर ही हो सकता है। बौद्धिक और नैतिक जीवन ही

(शेष...पृष्ठ 25 पर)

अमृत-सूची

- आपदा में आत्म-नियन्त्रण *(सम्पादकीय)* 4
- हम बदलेंगे, जग बदलेगा 5
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .6
- परदादी - देह में रहते विदेही...8
- ज्ञान-योग से जाग जाती है 9
- 'पत्र' संपादक के नाम 10
- ईश्वरीय कारोबार में.....11
- मोह का महल ढहेगा ही.....14
- होली का आध्यात्मिक रहस्य .15
- परमात्म अवार्ड.....17
- जाको राखे शिव भगवान 18
- सहना अर्थात् पूज्य बनना 19
- महिला सशक्तिकरण 20
- गरीबी से छुटकारा.....22
- न भूलें करावनहार की 23
- मैं और मेरापन.....24
- मन को दबाओ नहीं.....26
- काश! बाबा पहले मिला.....27
- तोल-तोलकर बोल 28
- रूहानी शान का जादू 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- लगा दिए उमंग-उत्साह.....32
- उबर चुकी हूँ दुखों से 33
- समय का महत्व.....34

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510
2. प्रकाशनावधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता – उपरोक्त
4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता – उपरोक्त
5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

आपदा में आत्म-नियन्त्रण

भगवान को ज्ञानी आत्मा प्रिय है पर उससे भी अधिक ज्ञानी तू आत्मा प्रिय है। ज्ञानी का अर्थ है, जो हर बात का केवल ज्ञान रखता है पर स्वयं पर उस ज्ञान को सदा उतारे रखने की इच्छा नहीं रखता। ज्ञानी तू आत्मा वह है, जो हर स्थिति, परिस्थिति में ज्ञान को, मूल्यों को धारण किए रहता है। हम देखते हैं कि बाज़ार में कच्चे और पक्के दोनों प्रकार के रंगों वाले कपड़े मिलते हैं। रंगों को परख़ने के लिए पानी में डुबोकर, मसलकर भी कपड़े को देखते हैं। कच्चे रंग वाला कपड़ा ऐसी परीक्षा में तुरन्त बदरंग हो जाता है। जैसे पक्के रंगों की छपाई कपड़े को आकर्षक बनाती है इसी प्रकार अनेक गुणों की धारणा से व्यक्तित्व आकर्षक बनता है। परन्तु देखना यह है कि ये गुण हर स्थिति-परिस्थिति में बने रहते हैं या प्रतिकूल स्थितियाँ पैदा होने पर गुण हमसे छूट जाते हैं। ईश्वरीय कर्त्तव्यों के यादगार शास्त्र रामायण में एक प्रसंग आता है – जब लक्ष्मण जी ने समाचार सुना कि कैकेयी द्वारा मांगे गए वरदानों के कारण श्री रामजी को वनवास जाना पड़ेगा तो वे दौड़ते हुए आए और श्रीराम जी से बोले, भैय्या, क्या आपको पता है, कैकेयी ने पिताश्री से आपके लिए वनवास-गमन का वर मांगा है? यह सुनकर श्री रामजी मुसकराए और लक्ष्मण जी से पूछा, पहले यह बता, माता कैकेयी को आपने कैकेयी कहना कब से शुरू कर दिया? इस पर लक्ष्मण जी, जो आपे से बाहर थे, एकदम आपे में आ गए।

समस्या आती है संयम को देखने

उपरोक्त प्रसंग हमें शिक्षा दे रहा है कि परिस्थितियों के तूफानों में भी हम कर्मों की मर्यादा बनाए रखें। अपने मन-वचन कर्म को नियन्त्रण में रखें। जैसे भारी बरसात पड़ने पर यदि नदी (गंगा) किनारों की सीमा से बाहर बहने लगे तो कोई उसकी पूजा नहीं करता, उससे बचने की कोशिश करते हैं। इसी प्रकार, कोई व्यक्ति कितना भी आदरणीय हो यदि समस्या में अपनी दृष्टि, वाणी, कर्म को नहीं सम्भाल पाता तो असम्मान का पात्र बन जाता है। समस्या तो हमारे धैर्य, संयम, आत्मनियन्त्रण को देखने आती है। जब उसे पता चलता है कि उसके आते ही हमारा धैर्य, संयम, आत्मनियन्त्रण, आत्मबोध सब चले गए तो वह हमें ज़ीरो नम्बर देकर और खुद पूरे सौ नम्बर लेकर विजयी मुसकान धारण कर लेती है।

किसी ने हमें बुरा कहा, इससे न डरें, बुरा करने से डरें

कई लोग शिकायत करते हैं कि हम घर-परिवार के लोगों की सेवा में, उन्हें सुख देने में सदा तत्पर रहते हैं। परन्तु फिर भी कभी भलाई नहीं मिलती। यदि एक बात में कभी कोई भूल हो जाती है तो सारे किए-कराए पर पानी फिर जाता है। झट से कह दिया जाता है कि यह तो कुछ नहीं करती। उस एक छोटी-सी बात के कारण हमारी पिछली सेवाओं का श्रेय भी हमसे छीन लिया जाता है। जब हम देखते हैं कि जी-जान से सब कुछ करने पर भी किसी ने दो बोल उमंग-उत्साह के नहीं बोले और एक बार किसी कारण से कोई सेवा छूट जाने से पिछला सारा श्रेय भी हमसे छीन लिया गया तो हम भी सेवा से जी चुराने लगते हैं, सोच लेते हैं, जाने दो, जब इन्हें कोई अहसास ही नहीं है तो क्यों कर-करके मरा जाए। जब हमारी अच्छाई को श्रेय नहीं मिलता तो हम भी बुरों के साथ बुराई का पथ अपना लेते हैं।

भगवान के महावाक्य हैं, 'कितना भी अच्छा करेंगे, लेकिन अच्छे को ज़्यादा सुनना-सहना पड़ता है।' दूसरी बात यह है कि किसी ने हमें बुरा कहा,

इससे न डरें, बुरा करने से डरें। दूसरे ने श्रेय छीन लिया पर स्वयं अपने आपको श्रेय देते रहें। श्रेय के अभाव में अच्छाई छोड़ देने का अर्थ होता है, हमें अच्छाई से प्यार नहीं था, श्रेय लेने से प्यार था, वह नहीं मिला तो अच्छाई छोड़ दी। लेकिन अच्छाई को निजी संस्कार बनाएँ। जैसे मेहन्दी पीसे जाने पर ही रंग देती है इसी प्रकार परिस्थितियों द्वारा पीसे जाने पर हम अपना गुण न छोड़ें, और ही उसे बढ़ा लें, ऐसी धारणा बनानी है।

बुद्धि रूपी बर्तन की शुद्धि

शिवबाबा कहते हैं, योग पूरा होगा तो ही बुद्धि रूपी बर्तन पवित्र होगा और गुणों की धारणा भी होगी। बुद्धि रूपी बर्तन के पवित्र होने का अर्थ क्या है? हम घरों में बर्तन को शुद्ध कब मानते हैं? एक तो जब उसमें कोई तामसिक चीज़ न डली हो और दूसरा, यदि सात्विक चीज़ डली हो तो वो भी एक ही हो। जैसे यदि बर्तन में दाल डली हो और उसके ऊपर के हिस्से में थोड़ी कढ़ी, थोड़ी सब्जी, थोड़ी मलाई आदि लगे हों तो यही कहा जाएगा कि बर्तन को ठीक से मांजा नहीं गया, तभी तो कुछ का कुछ लगा है। हालाँकि कढ़ी, सब्जी, मलाई आदि चीज़ें अशुद्ध नहीं हैं पर एक बार बर्तन में एक ही चीज़ होनी चाहिए, दूसरी, तीसरी नहीं, अंश मात्र भी नहीं। इसी प्रकार, बुद्धि भी बर्तन है। उसमें कोई तामसिक विचार तो होना ही नहीं चाहिए, इसके अलावा यदि हम एक विचार (बाबा की याद) में बुद्धि को लगाते हैं और साथ-साथ, दूसरे-तीसरे विचार (सेवाकार्य के, किसी से ज्ञानयुक्त चर्चा के) भी आते हैं तो भी बुद्धि रूपी बर्तन कम शुद्ध माना जाएगा। यद्यपि ये विचार अशुद्ध नहीं हैं पर एक बार में एक ही दिशा में लगाई गई बुद्धि में यदि अलग-अलग दिशाओं के विचार आते हैं तो यह भी बुद्धि का भटकाव कहा जाएगा। अत: योग पूरा होने का अर्थ है बुद्धि केवल एक शिवबाबा की याद में ही लगी हो, तो ही बुद्धि रूपी बर्तन पवित्र होगा और उसी पवित्र बुद्धि में ज्ञान और गुणों की धारणा होगी।

– ब्र.कु. आत्मप्रकाश

हम बदलेंगे, जग बदलेगा

ब्रह्माकुमार प्रकाशचन्द, गाज़ियाबाद

जब मैं सेना में सेवारत था तब काफी गुस्सा करता था, नशा करता था और अहंकारी भी था। सब विकार भरे थे। सेना से सन् 2001 में जब सेवानिवृत्त हुआ तो अहसास हुआ कि आज संसार में बहुत दुख है। घर-परिवार में क्लेश, गुस्सा, तनाव और साथ में मांस-मदिरा आदि व्यसनों के सेवन से मानव आपने आपको दुखी कर रहा है। मेरी हालत भी ऐसी ही थी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा ज्ञान मिला तो अपने जीवन को परिवर्तन किया। इससे मेरे परिवार का दुख दूर हुआ और हम खुशहाल जीवन जीने लगे। मेरे पिताजी, जो रोज़ाना शराब पीते थे, उन्होंने पीनी छोड़ दी और ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बन गये। जब मेरा जीवन खुशहाल बना तो मैंने संकल्प किया कि दूसरों की सेवा करके उन्हें भी खुशहाल बनाना है। अब मैं फौज, पुलिस, पैरामिलट्री फोर्स, स्कूल, कालेज, गाँव तथा शहरों में जगह-जगह जाकर नशा छोड़ने और खुशहाल जीवन जीने की कला सिखाता हूँ। राजयोग की शिक्षा द्वारा तनाव रहित जीवन का गुर बताता हूँ। पूरे भारत में 600 प्रोग्राम से ज्यादा कर चुका हूँ।

सभी भाई-बहनों से गुजारिश है कि अगर जीवन की सत्य पहचान व ईश्वरीय ज्ञान चाहिए तो ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र में जाकर सात दिन का कोर्स कीजिए। स्वयं, परिवार व साथियों का जीवन श्रेष्ठ बनाने में सहयोगी बनिये। कहा जाता है, जैसा सोचोगे वैसा बनोगे, जैसा करोगे वैसा भरोगे। कर्म का ज्ञान और अपना लक्ष्य जानने के लिए आइये और भगवान का निमन्त्रण स्वीकार कर भारत को स्वर्ग बनाने में सहयोगी बनिए। हम बदलेंगे, जग बदलेगा। भगवान आपके द्वार पर खड़े हैं भाग्य देने के लिए। सिर्फ एक कदम आगे बढ़ाएं अर्थात् शुद्ध संकल्प करें और सुखमय जीवन जीने का आनन्द लें।

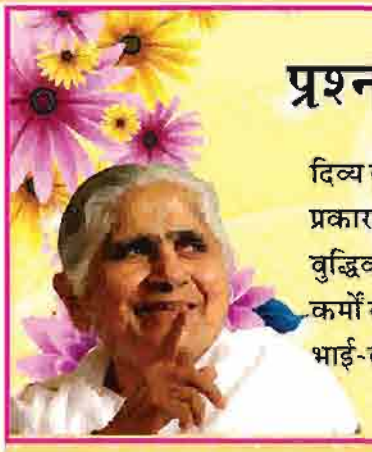

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- पुराने स्वभाव-संस्कार से क्या नुकसान है?

उत्तरः- मैं निवेदन करती हूँ कि अपना कोई स्वभाव-संस्कार थोड़ा पुराना है तो उसे प्रयोग नहीं करो। आप उसे प्रयोग करते हो तो दूसरे की अच्छी भावना को प्रयोग नहीं कर सकते हो। अगर त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी होंगे तो बदलने का ख्याल आयेगा। जो त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी नहीं हैं उन्हें, मुझे बदलना है, यह भावना नहीं है। यह बदले, ऐसा भाव दुःख की लेन-देन करने वाला है। अच्छे वायब्रेशन रखो, अच्छी भावना रखो, उसका भण्डारा भरपूर हो। किसी का नाम, रूप, देश कुछ दिखाई न पड़े, कुछ याद न आये, यह नेचुरल स्थिति बनाओ तो ऐसी सेवा बाबा को अपने आप प्रत्यक्ष करेगी।

प्रश्नः- टेन्शन से बचने के लिए क्या करें?

उत्तर- बाबा कहते हैं, बच्चे शरीर छोड़ने तक भी अध्ययन करते रहना है। ऐसे नहीं, मुझे इतने साल हुए हैं, मुरलियां तो पढ़ी हैं, रिवाइज कोर्स ही तो है, ऐसे भी ख्याल से मुरली मिस की तो वह दिन अच्छा नहीं होगा। वन्डर तो यह है, रिवाइज कोर्स है, पर आज के लिए वही ज़रूरी है। बाबा ने जो समय सारणी बनाकर दी है, उस पर चलते चलो। जो कानों से सुना है, वह स्वरूप में लाओ। बाबा कहते, मेरी नाक की लाज रखो। हम किस कुल के हैं, किसके बच्चे हैं, क्या मेरा कार्य है, कहाँ के हम रहने वाले हैं, यह याद रखो। अपने आपको साफ भी रखना है, सेफ भी रखना है। जितना अपने ऊपर अटेन्शन रखो, उतना टेन्शन फ्री हो जाते हैं। टेन्शन सिर दर्द कर देता है, सिर भारी कर देता है, उमंग-उत्साह कम हो जाता है। अटेन्शन है तो कभी भारी नहीं होते, हलके रहते हैं और उमंग-उत्साह के पंख उड़ती कला में लेकर जाते हैं।

प्रश्नः- कौन-से एक शब्द में बहुत बल भरा है?

उत्तरः- सेवा करते स्थिति बनाने की अन्दर लगन हो। ज्वालामुखी योग माना अन्दर ही अन्दर ऐसी लगन हो जो मेरी स्थिति मज़बूत बने। कभी भी किसी भी कारण से परन्तु, किन्तु नहीं बोलें। स्थिति मज़बूत बनाने की अन्दर में जो भावना है उसे बाबा पूरी करते हैं। और तो कोई दुनियावी इच्छा है ही नहीं। मेरे को इच्छा यही है कि स्थिति अच्छी हो। बाकी यज्ञ मेरे बाबा का है सो मेरा है। सेवा दिल से, प्यार से करेंगे, कोई के भाव-स्वभाव में नहीं आयेंगे, सोचेंगे भी नहीं। किनारा नहीं करना है पर न्यारा रहना है। बात पूरी हुई, सेकेण्ड में आगे बढ़ो। मैंने देखा है, सच्चाई और प्रेम की भावना, कर्मयोगी अच्छा बनाती है। ज़रा भी सच्चाई में कमी न हो। गहराई में जाकर देखना है कि सच्चाई मेरे पास है? दिल में सच्चाई है तो साहेब राज़ी है। बाबा उन्हें निमित्त बनाके कई कार्य कराता है। स्वयं के पुरुषार्थ में, सेवा में सच्चाई से काम लेना है। और सब बातों को भले भूलो पर सच्चाई के इस एक शब्द को अच्छी तरह सुनो,

समझो क्योंकि इसमें बहुत बल है।

प्रश्नः- सन्तुष्ट कौन रह सकता है?

उत्तरः- बाबा ने नये साल में सदा सन्तुष्ट रहने की गिफ्ट दी है। सदा सन्तुष्ट वो रहता है जो रूहानियत में रहता है। सदा शान में रहता है, परेशान नहीं होता है। कितना महीन, सदा अतीन्द्रिय सुख में रहने वाला रास्ता बाबा ने दिखाया है। तो सदा सन्तुष्ट रहो। सन्तुष्ट न रहने का कारण सहन शक्ति नहीं है। सहनशक्ति तब आती है जब धीरज है। बाबा ने कहा है, सन्तुष्ट रहने में सब शक्तियां साथ देती हैं। पहले-पहले धीरज और सहनशक्ति बड़ा साथ देती हैं, फिर समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति – ये सब शक्तियां सन्तुष्ट रहने में मजबूत बनाती हैं। जब से बाबा के पास आये हैं, मरजीवा जन्म हुआ है, अलौकिक जन्म की खुशी है, उसमें सन्तुष्ट बहुत हैं। कोई भी कारण हमारी खुशी को गुम न करे।

प्रश्नः- शिव बाबा से मदद कब मिलती है?

उत्तरः- मुझे कोई मददगार नहीं है, यह ख्याल भी नहीं आना चाहिए। दिल का प्यार बाबा से है, हिम्मत और सच्चाई है तो अपने आप बिना बोले मदद मिलती है। मैं मानती हूँ, बाबा की मदद बहुत है पर मांगती कभी नहीं हूँ। मांगने से वे कभी मदद नहीं करेंगे। बाबा भी हठीलें हैं, हमको रॉयल बच्चा बनाते हैं। अगर कहेंगे, बाबा, मैं क्या करूं, मुझे मदद करो ना! तो नहीं करेंगे। कई लिखते हैं, मैंने बाबा से बहुत मदद मांगी, बाबा ने मदद नहीं की। कोई चिल्लाते हैं, मैं क्या करूं, माया बहुत तंग करती है.. तो चिल्लाने से बाबा मदद नहीं देते हैं। मैंने बाबा को प्यार से कहा, बाबा, आप अच्छा चला रहे हो, तो बाबा ने कहा, चल रही हो तो चला रहा हूँ। अगर कहूँ, अच्छा चलाओ ना, तो कहेंगे, लंगड़ी हो क्या! अच्छा चलूँगी, तो खुशी से मदद करते हैं। तो मैं आपको बाबा का अन्त बताती हूँ कि बाबा कैसे हैं। बाबा को समझ करके उन्हें ऐसा साथी बनाओ, जो बाबा भी देखें कि मेरा बच्चा सदा हर्षित है, मुरझाता, मूंझता नहीं है, तो खुश हो जाते हैं। जो घड़ी-घड़ी मूंझता या मुरझाता है तो बाबा क्या कहेंगे! बच्ची, मैं कहता हूँ, तुम मुसकराओ और तुम मुरझाती हो!

प्रश्नः- मुश्किलें आसान करने का आसान तरीका बताइये?

उत्तरः- बातों को समेटके पवित्रता की शक्ति को बढ़ाते चलो। सेवा भी संकल्प की शुद्धि (पवित्रता की गहराई) से करो तो हलके रहेंगे, खुश होंगे क्योंकि बिना सेवा के खुशी कहाँ से आयेगी? इस पुराने शरीर को भी भगवान ने पवित्रता की शक्ति से चलाया है। एक बारी बाबा ने कहा कि बच्ची चल रही हो तो मैं चला रहा हूँ। अगर मैं कहूँ, मैं कैसे चलूँ? बाबा मैं क्या करूँ? ऐसे कहते-कहते मेरा क्या हाल होगा? अन्तिम जन्म में बाप की श्रीमत पर चलने से हमारी अन्त मति सो गति अच्छी हो रही है। बाबा को नज़रों में रखते हैं तो और कोई बात नज़रों में नहीं आती है, बाबा को दिल में रखो तो और कोई बात दिल में नहीं आती है क्योंकि बाबा का बनने से एकदम दृष्टि, वृत्ति ऐसी हो जाती है जो और कुछ अच्छा नहीं लगता है। कितनी भी सेवा करो पर ऐसे नशे में रहो कि मैं कौन हूँ? किसकी हूँ? उसके अन्दर का हाल बहुत अच्छा है। कभी क्या करूँ, कैसे करूँ, टू मच है... ऐसी भाषा बोलने वाले को बेहाल कहा जाता है। बाबा की नज़रों से सब ठीक हो जाता है, जो उसके नजदीक आता है वो भी निहाल हो जाता है, तो ऐसे नज़र से निहाल करने वाले को स्वामी कहा जाता है। सब भाई-बहनों प्रति मेरी भावना है कि सब सेवा करें लेकिन अन्दर ही अन्दर जो बाबा ने हमको अपना बनाके मुसकराना सिखाया है वो भूलें नहीं, उसकी प्रैक्टिस रह न जाए। कोई बात में मुश्किल आयेगी तो भी मुसकराने की प्रैक्टिस से सब मुश्किलें आसान हो जाती हैं। हर समय सेवा करते, मुसकराते रहो। ऐसे बाबा को याद करने से सुख मिलता इलाही है। ❖

पुण्यतिथि पर विशेष...

परदादी – देह में रहते विदेही

● ब्रह्माकुमारी रुक्मिणी, शान्तिवन

राजयोगिनी दादी निर्मलशान्ता जिन्हें दैवी परिवार 'परदादी' कहकर सम्मानित करता था, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका तथा पूर्वी क्षेत्रों की मुख्य संचालिका थीं। आपका त्याग, तपस्या, उच्च धारणाएँ तथा निर्मलता हम सबके लिए अनुकरणीय हैं। आपने 15 मार्च, 2013 में अव्यक्त स्वरूप धारण कर लिया। प्रस्तुत हैं पुण्यतिथि पर विशेष संस्मरण – सम्पादक

विदेही अवस्था, अशरीरी अवस्था, न्यारे-पन की अवस्था हमने परदादी में देखी। परदादी को साकार बाबा ने सन् 1964 में मुम्बई से कोलकाता भेजा। वहीं से परदादी जी आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा और नेपाल में सेवा करने के निमित्त बनी। वर्तमान समय बांग्लादेश भी ईस्टर्न ज़ोन में है। सन् 2003 में जब कोलकाता में विशाल मेला करवाया तब अव्यक्त बाबा ने परदादी को वरदान दिया कि आप सिर्फ बैठ जाना, बाबा अपना कार्य करवा लेगा। इतना बड़ा ज़ोन होने पर भी परदादी के मुख से कभी नहीं सुना कि मेरा ज़ोन है, मेरे इतने सेन्टर हैं, मैं संभालती हूँ। सदैव मुख से निकलता था, बाबा करा रहे हैं। रिंचक मात्र भी मैं-पन, मेरा-पन उनमें नहीं देखा।

शरीर का इतना बड़ा हिसाब-किताब होने के बाद भी चेहरा सदैव मुसकराता हुआ देखा। डाक्टर जब सूई लगाने आता था तो कहती थी, सूई बड़े प्यार से लगाओ। कभी दर्द के वशीभूत चेहरा नहीं हुआ। तबियत ठीक न होने पर भी उनका पुरुषार्थ, उनकी अवस्था आश्चर्यजनक थी। जैसा नाम (निर्मलशान्ता) वैसी ही उनकी सहनशक्ति की स्टेज नज़दीक से देखने को मिली। जितनी शारीरिक कमज़ोरी, मनोबल उतना ही ऊँचा। कमाल बाबा की है, इन दादियों की है, बाबा ने इनके अन्दर कूट-कूट कर शक्तियाँ व गुण भर दिये हैं। उनके साथ बिताये हुए पल, उनके बोल, उनकी स्थिति आदि की स्मृति निरन्तर प्रेरणा देती है।

एक बार की बात है, परदादी हास्पिटल में थी। बाबा की मुरली में आया, अष्ट रत्नों में आने वाले बच्चे सीधे मूलवतन में जायेंगे, 108 की माला वाले भी कुछ सज़ा खाकर जायेंगे। हमने पूछा, दीदी, आप कौन-सी माला के दाने हो? उन्होंने झट उत्तर दिया कि हम तो अष्ट रत्न में आने वाली हूँ, जब अन्तिम जन्म में श्रीकृष्ण की आत्मा ब्रह्मा के घर में जन्म हुआ तो सतयुग में भी श्रीनारायण के घर में जन्म लूँगी। यह नशा उन्हें सदा रहता था तथा नेत्रों से यह खुशी झलकती थी। चाल-चलन में उनके रॉयल संस्कार हर समय सोते, उठते, बैठते दिखाई देते थे।

उन्हें ज़रा भी अभिमान नहीं था कि मैं ब्रह्मा बाबा की बेटी हूँ। यदि कोई सामने से कहता था, ये ब्रह्मा बाबा की बेटी हैं तो झट उसे कहती थी, तुम नहीं हो क्या? हास्पिटल में जितनी बार जाती थी, डाक्टर की सेवा करती थी। सभी डाक्टर हाथ जोड़ कर कहते, नमस्ते, तो जवाब देती थी, सदा रहो हँसते। यह उनका विशेष मंत्र होता था। सदैव खुशी की खुराक खाते रहो, खुश रहो, आबाद रहो, यह उनका महान मंत्र था। एक बार किसी बहन ने उनसे पूछा, आपके

पास बाबा मिलने आते हैं? परदादी ने कहा, दोनों समय बाबा आते हैं, सिर पर हाथ घुमा कर जाते हैं।

एक बार निर्वैर भाई साहब परदादी से मिलने हास्पिटल आये। किसी ने पूछा कि ये कौन हैं? तो झट कहने लगी, ये निर्वैर हैं जिनका किसी से वैरभाव नहीं। इस प्रकार हर बात में ऐसा राज़युक्त जवाब देती थी, जो सुनने वाला मुग्ध हो जाता था। परदादी ने कभी संकल्प में भी व्यर्थ नहीं सोचा होगा, गुप्त रूप से अनेकों की सेवा करती रहती थी। इस प्रकार वे दुआओं का स्टॉक जमा कर, पुण्य की पूँजी साथ लेकर गई।

एक बार परदादी हास्पिटल में थी। डाक्टर उन्हें देखने के लिए आए और कहने लगे, आप सभी दादियों की लम्बी आयु का राज़ क्या है? मैंने जवाब दिया, ये हमारे यज्ञ के पिल्लर हैं, फाउण्डेशन हैं, इन दादियों के सहारे हमारा यज्ञ चल रहा है। डाक्टर झट कहने लगा कि दुनिया में कोई बुजुर्ग होता है, बीमार होता है वह खुद कहता है, भगवान हमें उठा लो परन्तु आपके आश्रम में इन दादियों की तबियत इतनी नाजुक होते भी कभी मुख से नहीं सुना कि भगवान हमें उठा लो। इनके चेहरे से, नेत्रों से बहुत शक्तिशाली वायब्रेशन आते हैं। कमाल है इन दादियों की! जब जानकी दादी को देखते, परदादी को देखते, गुलजार दादी को देखते तो वे आश्चर्यचकित होते। यह ईश्वरीय ज्ञान का फल है।

परदादी स्नेह की मूर्ति थीं। हम बहनों को सदैव कहती थीं, मुझे पहले प्यार करो तब मैं चारपाई से उठूँगी। कुछ पिलाते थे तो भी कहती थीं, पहले प्यार करो, फिर पीती थीं। प्यार और स्नेह से बाबा ने बचपन से परदादी को पाला था। अन्त तक भी वे प्यार की पालना में पलती रहीं। उनके पदचिन्हों पर चलने का दृढ़ संकल्प ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

❖

ज्ञान-योग से जाग जाती है सुप्त ऊर्जा

ब्रह्माकुमार विजय गुप्ता, जयगाँव (प.बंगाल)

परमात्मा ने हम आत्माओं को अनेक अलौकिक आंतरिक शक्तियाँ उपहार स्वरूप दी हैं जो कि अभी सुप्त अवस्था में हैं। जब योग और ज्ञान के निरंतर अभ्यास से भीतर की सोयी हुई दिव्य ऊर्जा जागती है तो जीवन उसी तरह पूर्ण रूप से प्रकाशमान हो जाता है जैसे किसी बंद कमरे की कोई ईंट निकल जाने से उस झरोखे से सूर्य की किरणें प्रवेश कर उसे आलोक से भर देती हैं। योग और ज्ञान के प्रभाव से जीवन में दिव्य गुण प्रवेश करते हैं, वाणी में शहद-सी मिठास घुल जाती है। सोच पूर्ण रूप से सकारात्मक हो जाती है।

मनुष्य अपना भाग्य, अपने अच्छे व बुरे कर्मों द्वारा ही रचता है। सुख और दुख हम अपने कर्मों द्वारा स्वयं प्राप्त करते हैं। सुख में हैं तो कारण हम हैं, दुख में हैं तो दोषी हम हैं, इसमें दूसरों पर दोषारोपण नहीं कर सकते। हमारा जन्म इस धरती पर अकारण ही नहीं हुआ है। परमात्मा पिता हम से कुछ विशेष कार्य कराना चाहते हैं। प्रभु ने अपने कार्य के लिए हम बच्चों को चुना है, हम बहुत ही भाग्यशाली आत्माएँ हैं। हम परमात्मा की दिव्य शक्तिपुंज संतान हैं। अपने आप को कभी दीन-हीन ना समझें। हमारे विचार और ऊँचे कर्म ही हमें पुण्यात्मा और देवता बनाते हैं। परमात्मा पिता ने कहा है, आँखों से बुरा मत देखो, कानों से बुरा मत सुनो, मुँह से बुरा मत कहो, हाथों से बुरा मत करो और मन से बुरा मत सोचो। ये महावाक्य हमारी कर्मेन्द्रियों से जुड़े हुए हैं। इनके जब हम मालिक हो जाते हैं, तो जीवन में परमात्मा की रोशनी उतर आती है, चेतना सज़ग हो जाती है। सोया हुआ इंसान दूसरों को क्या जगायेगा, जगा हुआ ही जगा सकता है। इन्द्रियों को वश करके हमारा जीवन कुम्भरण की नींद सोने वालों को जगाने में लग जायेगा। हम सुधरेंगे, जग सुधरेगा। हम बदलेंगे, जग बदलेगा और इस महान कार्य के लिए परमात्मा पिता सदा हमारे साथ हैं। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत के अक्तूबर, 2013 अंक में 'कर्मगति के ज्ञान द्वारा व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति' लेख पढ़कर मेरे जीवन में कुछ साल पहले घटी घटना के कारण जो व्यर्थ संकल्प और बदले की भावना बार-बार आती थी, उसका समापन हो गया। लेख से व्यर्थ चिंतन से बचने का मार्ग मिल गया। भूतकाल की घटना का दोष मैं रिश्तेदार वा संबंधियों को दे रहा था। लेख में दिये गये तर्क से 'कोई देने, कोई लेने आता है' समझ आई कि जो कुछ हो रहा है यह कर्म की गति है। इसमें किसी का कोई दोष नहीं।

– ब्र.कु.शिवयम,
सिन्धुदुर्ग (महाराष्ट्र)

नवम्बर, 2013 अंक को हाथ में लिया, आवरण पर दृष्टि पड़ी, प्रथम चित्र में महामहिम भ्राता प्रणव मुखर्जी, राष्ट्रपति, भारत विराजमान हैं। द्वितीय चित्र में राजयोगिनी दादी जानकी जी तथा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी आदि रोमांचक रूप से दृष्टि में आये। देखकर मन और आत्मा दोनों ही प्रफुल्लित हुए। इस ज्ञानमयी पत्रिका ने ईश्वरीय शक्ति का दर्शन करा दिया। धन्य है यह, जो पावन स्थल से निकलकर सारे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान को बिखेर रही है और पाठकों को ओत-प्रोत कर रही है। प्रथम पृष्ठ पर पढ़ने में आया ''ईर्ष्या को जीवन से निकाल दें''। धन्य हैं संजय जी, आपने अपनी अनूठी सोच एवं तीखी-पैनी कलम से मुझे एवं अन्य पाठकों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने का सफल प्रयास किया है। ईर्ष्या से जीवन के हर पहलू में गिरावट दिखाई देती है, ईर्ष्या डाकू बनकर मानसिक शक्ति को लूट लेती है, मानवीय जीवन पंगु बन जाता है। संजय जी की इन सभी बातों में बल है, प्रेरणा है अत: मैं संजय जी को साधुवाद करता हूँ।

– अत्तर सिंह, सूरजपुर-अलीगढ़

जनवरी, 2014 अंक में ''नवजीवन दाता मेरा बाबा'' लेख तथा अन्य लेख और कविताओं ने शुरू से अन्त तक ज्ञान प्रदान किया। ''ज्ञानामृत'' को लगातार सजाने, संवारने का आपका प्रयत्न निश्चय ही अत्यंत सराहनीय है। विचारोत्तेजक तथा शोधात्मक सामग्री प्रकाशित कर भारतीय वांग्मय की एक अपूर्णीय क्षति को आप पूरा कर रहे हैं। ''ज्ञानामृत'' रचना-चयन की दृष्टि से काफी समृद्ध लगी। रचनाओं का चयन काफी मनोयोग पूर्ण ढंग से किया गया है।

– पंडित मेवालाल ''परदेशी'',
महतवाना, महोबा (उ.प्र.)

नवम्बर, 2013 अंक में लेख ''कामजीत-जगतजीत'' बहुत अच्छा लगा। वैसे तो बाबा ने समय प्रति समय काम रूपी शत्रु को जीतने की अनेक युक्तियाँ बताई हैं परन्तु अच्छा विचार सागर मन्थन कर लेखक ने सभी युक्तियों को एक साथ लेख के रूप में प्रस्तुत किया है जो कि सराहनीय प्रयास है। सम्पादकीय लेख, रमेश भाई जी का लेख व 'दिल से देते चलो दुआएँ' लेख भी बहुत अच्छे लगे। इन लेखों को जितनी बार हम पढ़ते हैं उन से हर बार ज्ञान के नए हीरे-मोती प्राप्त होते हैं जो कि स्व-उन्नति व ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में बहुत लाभदायक हैं।

– ब्र.कु.बिशन दास, पठानकोट

जनवरी, 2014 के अंक के सभी लेख रोचक, सत्य, अनुभवपूर्ण, मार्मिक, हृदयस्पर्शी और विशेष तौर पर वरदानी साबित हुये। ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने बताया कि वे 'प्युरिटी' पत्रिका के संपादक कैसे बने और बाबा ने अपने वरदान को कैसे साकार किया। उन्होंने सत्य ही कहा कि 'याद' में ही सच्ची कमाई है। ब्र.कु.चंदूलाल भाई का 'सत्य बाबा के सत्य बोल' बिल्कुल सत्य कथन है। ब्रह्माकुमारी अचल बहन का अनुभव 'ड्रामा बना हुआ है, धैर्य के गुण को धारण करना है,' बहुत अच्छा है। ज्ञानामृत सच्चा मार्ग दिखलाने वाली सुंदर पत्रिका है।

– ब्र.कु.उमाकांत भाई सांगाणी,
अमरावती

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 5

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था सम्पन्न करने के बारे में यह पाँचवाँ लेख है। हम सब जानते हैं कि यह विश्व विद्यालय एक प्रशिक्षण केन्द्र भी है जहाँ भविष्य के विश्व कारोबार के लिए निमित्त बनने वाले सौभाग्यशाली भाई-बहनों को परमात्मा द्वारा पढ़ाया जाता है।

इसी संदर्भ में एक बात बहुत ज़रूरी है कि जो इस प्रकार के कारोबार में निमित्त बनते हैं उनके लिए परमात्मा ने बताया है कि उन्हें तीन सर्टिफिकेट लेने आवश्यक हैं – स्व-पसंद, लोक पसंद और प्रभु पसंद। लोकपसंद बनना बहुत ज़रूरी है क्योंकि यहां पर स्वयं में यह संस्कार भरेंगे तो उसी आधार पर भविष्य कारोबार हमारे हाथ में होगा। लोकपसंद के बारे में गायन है, 'राम राजा, राम प्रजा.. बसे नगरी... जिये दाता धर्म का उपकार है...' अर्थात् वहां पर जो विश्वमहाराजा बनेंगे वे इतने लोकपसंद होंगे कि सारी प्रजा राजा को अपने परिवार के सदस्य के रूप में समझेगी और राजा के लिए भी प्रजा अपने परिवार की भाँति होगी। वह प्रजा का बहुत ख्याल रखेगा। जैसे हम यहाँ संगमयुग में कहते हैं कि मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा वैसे ही सतयुग में प्रजा भी राजा के लिए यही समझेगी कि मेरा राजा, प्यारा राजा, मीठा राजा। वहाँ राजा, प्रजा के हर कार्य में पूर्ण रूप से सहयोगी रहेगा। द्वापरयुग में भी राजा विक्रमादित्य का गायन था कि वह परदु:खभंजन था और प्रजा की सभी समस्याओं एवं दु:ख दूर करने में मददगार बनता था। ऐसे ही कई राजायें वेष बदलकर रात को अपने राज्य में घूमते थे ताकि उनको प्रजा के सुख-दु:ख के बारे में जानकारी मिले और उसी अनुसार वे प्रजा के हित के लिए कार्य कर सकें। राजा और उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता प्रजा की रक्षा के लिए कार्य करते थे और इसी कारण प्रजा सुख-शांति से अपना जीवन व्यतीत कर पाती थी। इसलिए शास्त्रों में गायन है कि प्रजा अपने राजा को पिता समान मानकर उनका सम्मान करती थी।

महाकवि कालीदास ने रघुवंश में बहुत ही सुन्दर रीति से रघुवंश के राजाओं की महिमा करते हुए बताया है कि रघुवंश के राजा अपनी प्रजा से किसी भी प्रकार का कर (Tax) नहीं लेते थे परंतु प्रजाजन स्वेच्छा से अपना बचा हुआ अधिक धन राजकोष में जमा करते थे और कृषि उत्पाद राजभण्डारे में जमा करते थे। इसी प्रकार जब राजकोष भरपूर (overflow) हो जाता था तब रघुराजा ऐसा एलान कर देता था कि जिसको जितना धन चाहिए वह उतना राजकोष से लेकर जाए।

सतयुगी श्रेष्ठ दुनिया के राज्यकारोबार के बारे में गायन है कि वहां के विश्व महाराजा श्री लक्ष्मी-श्री नारायण थे जिनकी हम आज भी मंदिरो में पूजा करते हैं अर्थात् प्रजा का राजा के प्रति बहुत अधिक पूज्य भाव था। आदर्श राज्यव्यवस्था में यह ज़रूरी है कि राजा प्रजा का प्रिय हो अर्थात् लोकपसंद हो।

आज के समय में दुनिया में चुनाव होते हैं और ये चुनाव कई जगह 4 वर्ष के बाद और कई जगह 5 वर्ष के बाद होते हैं। आज गद्दी पर कोई है तो कल कोई और होता है और इसलिए कारोबार ठीक रीति से नहीं होता। चुनाव से पहले एक पार्टी के लोग दूसरी पार्टी के लोगों के लिए अभद्र व अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करते हैं और कुप्रचार करते हैं और 25 से 40 प्रतिशत नेता ऐसे होते हैं जिन पर कई कोर्ट केस आदि चल रहे होते हैं। तो आम आदमी भी सोच में पड़ जाता है कि हमारे नेता या राज्यकारोबारी ऐसे हैं जो असभ्य भाषा बोलते हैं और

गलत कार्य करते हैं तो ऐसे लोगों को हम अपना नेता कैसे बनायें। ऐसे में मैं एक बात बताना चाहता हूँ, मुम्बई में हमारे सेवाकेन्द्र पर एक पुलिस अफसर आते थे। उन्होंने बताया कि हमारी जेल में एक नेताजी थे जिन्हें जेल में रखने का कोर्ट का ऑर्डर था। उन नेताजी ने जेल से ही चुनाव लड़ा और वे जीतकर विधायक बन गये तब इस पुलिस अफसर को बड़ी दुविधा हुई कि कल तक जो हमारी जेल में थे और हमें सलाम करते थे, वे आज हमारे विधायक बन गये और इसलिए हमें उनको सलाम करना पड़ता है। ये वर्तमान समय की विडम्बना है।

सतयुगी दुनिया का कारोबार इस प्रकार का नहीं होगा, इसे समझने के लिए हमें परमात्मा का समाजवाद समझाना पड़ेगा। आज की दुनिया के समाजवाद में चुनाव होता है और जिसे बहुमत प्राप्त होता है वह राज्य करता है। परमात्मा के चुनाव का कारोबार संगमयुग पर होता है। यहाँ परमात्मा सबको एक जैसा ईश्वरीय ज्ञान देते, राजयोग सिखाते हैं और कहते हैं कि आप स्वयं अपने भाग्य के विधाता हैं, मैं आपका भाग्य नहीं बनाता हूँ, आप अपने पुरुषार्थ के आधार पर स्वयं अपना भाग्य बनाते हो। आपका भाग्य न कोई बना सकता है और न कोई बिगाड़ सकता है अर्थात् शिवबाबा सभी को भविष्य में श्रेष्ठ राज्य पद प्राप्त करने की गोल्डन लॉटरी देते हैं। संगमयुग एक चुनाव क्षेत्र है जहाँ पर हम अपने पुरुषार्थ के आधार पर भविष्य राज्य के अधिकारी बनते हैं इसलिए शिवबाबा ने कहा है कि 'जो करेगा सो पायेगा।' हम सभी ब्रह्मावत्सों को यह ज्ञान शिवबाबा ने दिया है परंतु फिर भी हम अपनी रोजमर्रा की ज़िंदगी में और उसकी समस्याओं में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि भविष्य के लिए अपना श्रेष्ठ भाग्य बना ही नहीं पाते। एक बार साकार बाबा ने सभी बच्चों को यही संदेश दिया कि बच्चे, अगर आपके पास अपने परिवार की पालना के लिए पर्याप्त धन है तो विशेष धन की प्राप्ति का पुरुषार्थ न करते हुए ईश्वरीय सेवा में लगकर अपने भविष्य श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण करने का पुरुषार्थ करो।

एक बार जब मैं मधुबन में था तो ब्रह्मा बाबा ने कहा कि आज अगर कोई बच्चा यह पूछे कि आज अगर मेरा शरीर छूटे तो मेरा भविष्य में क्या पद होगा तो बाबा बता देगा। तो मैंने बाबा से कहा कि बाबा आज तो आपके पास बहुत लम्बी लाइन लग जायेगी। तो बाबा ने कहा, नहीं बच्चे, बाबा के पास कोई भी नहीं आयेगा क्योंकि हरेक अपने वर्तमान पुरुषार्थ और स्थिति के अनुसार जानते हैं कि उनका क्या पद हो सकता है। हरेक को अपने स्वभाव-संस्कार का बंधन या अन्य कोई न कोई बंधन है जिसकी मजबूरी के चलते चाहते हुए भी सभी श्रेष्ठ भविष्य पद को प्राप्त करने का पुरुषार्थ नहीं कर सकते। अंत में सभी को यह महसूस होगा कि संगमयुग पर मुझे इतना श्रेष्ठ अवसर मिला परंतु मैं पुरुषार्थ नहीं कर सका इसलिए श्रेष्ठ पद प्राप्त नहीं कर सका। इसी कारण सतयुग में राजा के प्रति प्रजा के मन में ईर्ष्या या द्वेष भावना नहीं होगी तथा राजा और प्रजा का आपस में सम्मान का भाव होगा।

यह परस्पर सम्मान भाव एवं समानता की भावना हमारे प्यारे बाबा, प्यारी मातेश्वरी जी और दादी प्रकाशमणि जी ने हम सभी में पैदा की जिस कारण इस विश्व विद्यालय ने 77 वर्ष पूर्ण किये। मैंने ज्ञानामृत में एक बार एक हँसी की बात बताई थी कि अगर अपने यहाँ भी चुनाव किया जाये और इस चुनाव में एक ओर दादी प्रकाशमणि जी और दूसरी ओर मैं खड़ा रहूँ तो सभी के मत (Vote) केवल दादी प्रकाशमणि जी को ही जायेंगे यहाँ तक कि मेरा खुद का भी मत मैं उनको ही दूँगा। आज के कम्युनिस्ट देशों में केवल एक ही प्रतिनिधि खड़ा रहता है और सभी उस एक प्रतिनिधि को अपना मत देते हैं और घोषित किया जाता है कि वह

प्रतिनिधि निर्विरोध चुनकर आया। परंतु बाबा के यज्ञ में ऐसा नहीं है, दादी प्रकाशमणि जी अगर सौ प्रतिशत मतों से निर्विरोध चुनकर आती हैं तो इसका अर्थ है कि लोगों ने दादी जी की लोकप्रियता और गुणों के आधार पर खुशी से उन्हें अपना वोट दिया है। यह बात सिद्ध करती है कि हमारा श्रेष्ठ भविष्य आज के वर्तमान के आधार पर होता है। हमारे बाबा, मम्मा और दादियाँ इतने लोकपसंद हैं कि हम लोग अपने आप उन्हें अपने भविष्य का राज्यकारोबार सौंप देंगे।

इसी प्रकार से विश्व के राज्यकारोबार में जो भी निमित्त बनते हैं, उनमें एक विशेषता होती है जिसे मैनेजमेन्ट गुरु लोगों ने कहा है 'रचनात्मक होना' अर्थात् वे सदा अपने साथियों को किसी ना किसी विशेष रचनात्मक कार्य में व्यस्त करके रखते हैं। ऐसे लोग सदा ही अपने साथियों के उत्कर्ष के लिए प्रयासरत रहते हैं तथा कारोबार को सदा आगे बढ़ाते रहते हैं। इस प्रकार उनका कारोबार इतना सुन्दर रीति से चलता है कि उनके साथियों में कभी भी आलस्य और अलबेलापन नहीं आता है। दु:ख के समय भी उनका ऐसा व्यवहार होता है कि सामने वाले के मन में दु:ख की भावना नहीं आ पाती। जब मातेश्वरी जी ने अपना पुराना शरीर त्याग किया तब हम उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार करके वापस आये और ब्रह्मा बाबा से मिले। हमारे शोकमग्न चेहरे देखकर बाबा ने हमसे पूछा कि बच्चे क्या आप शोक मनाने आये हो? आपकी मम्मा तो श्री लक्ष्मी बनने का श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर श्रेष्ठ पद की अधिकारी बन गई तो अब आप उनके लिए शोक क्यों मना रहे हो? फिर बाबा ने हवाई महल में, जहाँ मेहमान थे, वह खाली करवाया और आई हुई टीचर्स बहनों के लिए तीन दिन का राजयोग शिविर रखा जिससे उनका शोक दूर हो गया। इसी प्रकार बाबा ने नई-नई सेवा की विधियों से बच्चों को अनेक सेवाओं के निमित्त बनाया। बाबा बच्चों को सदा ही नई-नई सेवाओं में व्यस्त रखकर उमंग-उत्साह भरते थे।

नवम्बर 1968 में मधुबन में प्यारे ब्रह्मा बाबा के मार्गदर्शन में वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट बनाने का तय हुआ तो उसका समाचार मैं आदरणीय भ्राता जगदीश जी को लिख रहा था। तभी बाबा वहाँ पहुँचे और उन्होंने मुझसे पूछा कि बच्चे, क्या कर रहे हो? मैंने कहा, बाबा, वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट बनाने का जो तय हुआ है, मैं उसका समाचार भ्राता जगदीश जी को लिख रहा हूँ। बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, आप यह काम छोड़ दो, बाबा खुद उनको यह समाचार देगा। आप तो मुम्बई जाओ और ट्रस्ट को रजिस्टर्ड करने का कारोबार करो। बाबा की श्रीमत अनुसार आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी और मैं मुम्बई गये। जब यह कारोबार चल रहा था तो प्यारे बाबा हमें रोज इसके बारे में शिक्षा देते रहे और हम उसी अनुसार ट्रस्ट का संचालन करते रहे। इस प्रकार दिनांक 16 जनवरी, 1969 को वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन हुआ। बाबा ने मुझे अहमदाबाद भेजा और कहा कि नक्की लेक के पास बूँदी कॉटेज है, उसकी बिक्री हो रही है, आप अहमदाबाद जाकर उसका सौदा करो। अहमदाबाद जाकर मैंने बाबा को समाचार दिया कि बाबा इस मकान का 95% कारोबार हो गया है और केवल 1/2 घंटे का काम रह गया है परंतु मकान मालिक कहता कि उस मकान की रजिस्ट्री 7-8 दिन के बाद ही करेंगे तो मैंने बाबा से पूछा कि क्या मैं अभी आबू आऊँ या बड़ौदा जाऊँ जहाँ नई प्रदर्शनी का कार्य चल रहा है? बाबा ने कहा, बच्चे आप बड़ौदा जाओ। परंतु दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे आबू आने का निमन्त्रण दिया। मैं 19 जनवरी को मधुबन में सुबह 10 बजे पहुँचा। बाबा के अव्यक्त होने के बाद मधुबन में बाहर से आने वाला पहला भाई मैं ही

था। फिर बाबा के अंतिम संस्कार आदि के लिए मैं निमित्त बना।

इस प्रकार से बाबा सदा ही ईश्वरीय सेवा में स्वयं भी तत्पर रहे और औरों में भी उमंग-उत्साह भरते रहे। सतयुग में भी राजायें अनेक प्रकार की प्रेरणायें और उमंग-उत्साह अपनी प्रजा में भरते हुए उन्हें किसी न किसी रचनात्मक कार्य में व्यस्त रखेंगे और प्रजा भी खुशी से अपना जीवन व्यतीत करेगी। अपनी प्रजा को रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखने की ज़िम्मेदारी राजाओं की होगी और भविष्य के लिए यह संस्कार हमें अभी ही संगमयुग में भरने हैं।

आज के समय में नये-नये कानून बनाते हैं, पाँच वर्षीय योजनायें बनाते हैं जिनका पूर्णरूपेण पालन भी नहीं हो पाता है। सतयुग में नये-नये कानून तो नहीं परंतु नये-नये कार्यक्रम बनते रहेंगे जिससे सभी के जीवन में सदा उमंग-उत्साह बना रहेगा। इस प्रकार से भविष्य राजकारोबार करने वाले लोकपसंद भी हों तो रचनात्मक कार्य करने वाले भी हों और साथ ही सभी के जीवन में उमंग-उत्साह लाने वाले भी हों। ❖

मोह का महल ढहेगा ही

– ब्रह्माकुमारी राजयनी, इलाहाबाद (उ.प्र.)

एक सच्ची घटना है कि एक विद्वान महामण्डलेश्वर थे। उनकी अभिलाषा थी गंगा किनारे आश्रम बनवाने की। कई वर्षों की चिन्ता और चेष्टा के परिणामस्वरूप धन एकत्रित हुआ, भूमि ली गई और भव्य भवन बनने लगा। भवन के गृह-प्रवेश का भण्डारा बड़े उत्साह से हुआ, सैकड़ों साधुओं ने भोजन किया। भंडारे की झूठी पत्तलें अभी फेंकी नहीं जा सकी थी, चूल्हे की अग्नि अभी बुझी नहीं थी कि स्वामी जी का परलोक वास हो गया। यह कोई एक घटना हो, ऐसी बात नहीं है, ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं। किसी ने ठीक कहा है,

कौड़ी-कौड़ी महल बनाया, लोग कहें घर मेरा।
ना घर मेरा, ना घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा।।

जिसे हम अपना भवन कहते हैं, क्या वह केवल हमारा ही है? जितनी आसक्ति, जितनी ममता से हम उसे अपना मानते हैं, उतनी ही आसक्ति, उतनी ही ममता उसमें कई औरों की भी है, क्या हम यह जानते हैं? लाखों चींटियाँ, गणना से बाहर मक्खियाँ, मच्छर और दूसरे छोटे कीड़े, सहस्त्रों चूहे, सैकड़ों मकड़ियाँ, दर्जनों छिपकलियाँ, कुछ पक्षी और पतंगे और ऐसे ही दूसरे प्राणी जिन्हें हम जानते तक नहीं, उनका ममत्व भी तो उसी कोटि का है जिस कोटि का हमारा।

मकान या महल – दोनों की गति एक ही है। बड़ी लालसा से, बड़े परिश्रम से उसका निर्माण हुआ। उसकी साज-सज्जा हुई लेकिन एक भूकम्प का हलका-सा...। आज तो कहीं भी, कभी भी किसी मनुष्य की पैशाचिकता ही भूकम्प से भी अधिक प्रलय कर सकती है। महानाश के मेघ विश्व के भाग्याकाश पर घिरते जा रहे हैं। वायुयानों से कब दारुण अग्नि-वर्षा प्रारम्भ हो जाए, कोई नहीं जानता। किसी अस्त्र का एक आघात, क्या रूप होगा इन भवनों और महलों का? काल अपना कार्य बन्द नहीं कर देगा। जो बना है, नष्ट होगा ही। महल का परिणाम है खण्डहर, वह खण्डहर जिसे देखकर मनुष्य डर जाता है। रात्रि तो दूर, जहाँ दिन में जाते भी सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य का मोह उससे महल बनवाता है और महल खंडहर बनेगा, यह निश्चित है। जीवन में हम मोह का विस्तार करते हैं; धन, जन, मान, अधिकार, भूमि जोड़ते हैं। ये सब भी और इनके प्रति मोह भी नष्ट होगा ही, मोह का महल ढहेगा ही। ❖

होली का आध्यात्मिक रहस्य

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

होली का त्योहार हर हिन्दी वर्ष के अन्तिम मास फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। वर्ष के अन्तिम दिवस का यह उत्सव सन्देश देता है कि हम वर्ष भर की गलतियों और बुरे विचारों को अग्नि में जला दें ताकि प्रारम्भ होने वाले नए वर्ष में हंसते-गाते पवित्रता का पालन करते चलें।

वर्ष के अन्तिम दिवस में पर्व के रूप में मनाई जाने वाली यह यादगार घटना वास्तव में कल्प के अन्त में घटी एक महाघटना की यादगार मात्र है। वह महाघटना क्या है?

प्रचलित कथा

होली के त्योहार से सम्बन्धित प्रचलित कहानी इस प्रकार है कि एक बार सृष्टि पर हिरण्यकश्यप नाम के राक्षस का राज्य था। वह अपने को ही भगवान मानता था और अपने सिवाय किसी अन्य की पूजा नहीं करने देता था। तपस्या के बल से उसने ऐसा वरदान पाया था कि साधारण रीति से उसे कोई भी नहीं मार सकता था। उसका पुत्र प्रह्लाद ईश्वर प्रेमी था और अपने पिता को भगवान नहीं मानता था। पिता ने उसे तरह-तरह की यातनाएं देकर ईश्वर-प्रेम से विमुख करने की कोशिश की। प्रह्लाद सब सहता गया। अति तो तब हो गई जब प्रह्लाद की बुआ होलिका, जिसे न जलने का वरदान प्राप्त था, प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश कर गई। पर होलिका का रक्षा-कवच उड़कर प्रह्लाद पर आ गया और वह जलकर भस्म हो गई। प्रह्लाद बच गया। इसके बाद परमात्मा पिता ने हिरण्यकश्यप को मार डाला। इस प्रकार ईश्वर-विरोधी की भेंट में ईश्वर-प्रेमी के विजय की यादगार रूप में यह पर्व मनाया जाता है।

क्या सुधार का एकमात्र मार्ग हिंसा ही है?

कहानी को पढ़कर कई पहलुओं पर प्रकाश मिलता है। पहला तो यह कि क्या भगवान का अवतरण किसी एक पापी का वध करने के लिए होता है? तब क्या 'अहिंसा परमोधर्म' का सिद्धांत गलत है। यदि जगत का मालिक ही हिंसा में हाथ रंगता है तो अहिंसक सृष्टि की स्थापना कौन करेगा? फिर सृष्टि में भाई-चारा और गाय-शेर इकट्ठे जल कब और कैसे पीयेंगे? क्या किसी के परिवर्तन का एक मात्र रास्ता हत्या ही है? कहते हैं, भारत के संन्यासियों के आश्रमों में शेर भी हिसंक वृत्ति भूलकर शान्त भाव से बैठा करते थे और महात्मा बुद्ध ने एक दुर्दान्त डाकू अंगुलीमाल को एक महान भिक्षु के रूप में परिणीत कर दिया था। तो क्या सर्वशक्तिमान परमात्मा उस एक विपरीत बुद्धि मानव का परिवर्तन नहीं कर सकते थे?

एक विचारधारा का प्रतीक हिरण्यकश्यप

वास्तव में हिरण्यकश्यप एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचारधारा का प्रतीक है। आज कई लोग स्वयं को शिवोहम् कहकर अपनी पूजा करवाते हैं। वे भगवान को अपने से भिन्न नहीं मानते। कहाँ आवागमन के बन्धन से सदामुक्त निराकार परमात्मा शिव और कहाँ जन्म-मरण के चक्कर में आने वाले ये शरीरधारी मानव? लोग इसे अद्वैत सिद्धांत कहते हैं परन्तु इसे सही अर्थ में लिया जाए तो सभी ब्रह्म हैं, सभी शिव हैं। तो क्या एक ब्रह्म दूसरे को उपदेश देता है और एक ब्रह्म दूसरे ब्रह्म से अपनी पूजा कराता है! वे नारी को सर्पिणी कह उसका मुख देखना पाप समझते हैं, तो क्या नारी ब्रह्म नहीं है? क्या राम के लिए सीता सर्पिणी थी, क्या नारायण के लिए लक्ष्मी सर्पिणी थी?

परमात्मा पिता ने दी नई विचारधारा

परमात्मा पिता ने वास्तव में उपरोक्त विचारधारा को समाप्त कर 'एक परमात्मा, एक विश्व परिवार' की विचारधारा का सूत्रपात किया। परमात्मा पिता ने बताया कि हम सभी

मानव, मूल स्वरूप में ज्योतिबिन्दु आत्माएँ हैं, एक ही पिता की सन्तान और एक ही घर परमधाम की निवासी हैं। सभी आत्माएँ आपस में भाई-भाई हैं। न कोई छोटा, न बड़ा, न नर, न नारी – ये सब तो शरीर रूपी चोले धारण कर निभाए जाने वाले भिन्न-भिन्न पार्ट हैं। हम सभी का मूल धर्म शान्ति है अत: हिन्दू, मुस्लिम आदि धर्म भी देह के हैं और एक जन्म तक हैं। देह बदलने पर देह का धर्म भी बदल जाता है।

ईश्वरीय स्मृति रूपी चादर

विचारधारा की इस क्रान्ति का प्रतीक है होली का त्योहार। लेख के प्रारंभ में हमने जिस महाघटना का जिक्र किया, वास्तव में परमात्मा का धरती पर अवतरित होना और हिरण्यकश्यप (विकारों का प्रतीक) का नाश कर प्रह्लाद (पवित्रता का प्रतीक) की रक्षा करना ही वह महाघटना है जिसकी याद में यह त्योहार मनाया जाता है। कल्प के अन्तिम युग कलियुग और कलियुग के भी अन्तिम चरण में धर्म की अति ग्लानि हो जाती है और हिरण्यकश्यप जैसे लोगों का ही बहुमत हो जाता है। राज्य-कारोबार भी उनके हाथों में ही आ जाता है। वे लोग परमात्मा से बेमुख होकर उनकी श्रीमत के विपरीत आचरण करते हुए मनमानी करते हैं। परमात्मा के मार्ग पर चलने वालों पर अत्याचार होते हैं, कलंक लगते हैं, उन्हें सहयोग नहीं मिलता है। ये अल्पमत में होते हैं। प्रह्लाद ऐसे ही लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। प्रह्लाद का अर्थ है वह पहला व्यक्ति जिसको माध्यम बनाकर परमात्मा पिता सबको आल्हादित करते हैं। इस कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए परमात्मा पिता गुप्त रूप में धरती पर अवतरित होते हैं। होलिका रूपी विकारी अग्नि से बचाने के लिए अपने बच्चों को योग अर्थात् ईश्वरीय स्मृति रूपी चादर (कवच) देते हैं। ईश्वरीय याद के बल से विकारों की अग्नि शीतल हो जाती है। ईश्वर से प्रेम करने वालों की जीत हो जाती है और उनसे बेमुख करने वाली भावना का नाश हो जाता है। इसी की याद में पहले दिन होलिका जलाई जाती है और अगले दिन एक-दो से गले मिलकर, एक-दो को रंग लगाकर स्नेह-मिलन किया जाता है।

परमात्मा पिता के संग का रंग ही अविनाशी रंग

इसलिए होली को रंगों का त्योहार कहा जाता है। स्थूल अबीर और गुलाल तो कुछ समय के बाद अपना प्रभाव छोड़ देते हैं और इनके कई हानिकारक प्रभाव भी हैं परन्तु ऐसे रंग कौन-से हैं जो युगों तक भी ना उतरें और जो सदा कल्याणकारी भी हों। स्पष्ट है कि ऐसे रंग तो ज्ञान, गुण और शक्तियों के ही हैं जिनसे आत्मा को रंगा जाता है। ये इतने पक्के रंग हैं जो चोला छूटने पर भी आत्मा से नहीं छूटते। परमात्मा का संग पाकर मानव आत्माएँ उनके गुणों का रंग अपने पर लगाती हैं। उसी के समान डबल अहिंसक, रहमदिल, सुखदाता, प्रेमदाता, शान्तिदाता, ज्ञानदाता, पवित्रता दाता बन जाती हैं। ऐसी आत्माओं के द्वारा नए युग, देवताओं के युग का सूत्रपात होता है जिस युग में सर्वत्र सुख-शान्ति का साम्राज्य होता है। प्रकृति सुखदायी और पशु-प्राणियों में भी आपसी प्रेम-सद्भाव होता है।

बरकुले अर्थात् बुरी वृत्तियाँ

होली के दिन गोबर के बरकुले बनाकर होली जलाते हैं और मंगल मिलन मनाते हैं। इसका रहस्य यह बताया जाता है कि इससे दुख, दरिद्रता और अपवित्रता दूर होती है। वास्वत में गोबर के बरकुले जलाने से नहीं बल्कि मन की दूषित वृत्तियाँ, कपटभाव और दुर्भावनाएँ आदि ज्ञान और योग की अग्नि में भस्म करने से जीवन आनन्दमय, पवित्र और सुखमय बनता है।

होली को राक्षस विनाश त्यौहार भी कहते हैं। हर मानव के अन्दर जो 5 विकार हैं वे ही उसे राक्षस बना देते हैं। परमात्मा के दिए हुए ज्ञान द्वारा इन पाँच विकारों का विनाश हो जाता है और मानव में देवत्व उदित हो उठता है।

ज्ञान-योग से कर्म बनते सुकर्म

होलिका का अर्थ भुना हुआ अन्न भी होता है। होली के दिन गेहूँ, जौ आदि को भूना जाता है। वास्तव में परमात्मा के दिए हुए ज्ञान और योगबल द्वारा कर्म, सुकर्म बन जाते हैं। जैसे भुने हुए बीज को बोयेंगे तो पौधा नहीं उगता। ऐसे ज्ञान-योग की स्थिति में रहकर कर्म करने से पाप कर्म के बीज जल जाते हैं।

स्वांग अर्थात् जीवन-लक्ष्य की स्पष्ट झलक

होली के दिन मनोरंजन के लिए स्वांग के रूप में अपने पूर्वजों को याद करते हैं। उनकी झाँकी सजाते हैं ताकि जीवन के लक्ष्य की झलक स्पष्ट दिखाई दे कि हमें भी अपने पूर्वज देवी-देवताओं समान गुण सम्पन्न बनना है। उपरोक्त रीति से होली के यथार्थ रहस्य को जानकर होली मनाएंगे तो सच्चे पुण्य के भागी बनेंगे।

परमात्म अवार्ड

● ब्रह्माकुमार प्रेरित, लखनऊ (हजरतगंज)

बात सन् 2010 की है, मैं देहरादून के एक प्रतिष्ठित कालेज में ग्रेजुएशन की पढ़ाई पढ़ रहा था। हमारे कालेज में हर साल कल्पना चावला एकैडमिक्स एक्सिलेन्स अवार्ड आयोजित होता था जिसमें पूरे इंस्टीट्यूट के चंद बच्चों को ये सम्मान प्राप्त होता था।

जब सन् 2010 में मैंने यह अवार्ड कार्यक्रम देखा तो मन में प्रश्न घूमने लगा कि यह मुझे क्यों नहीं मिला। मैं पढ़ाई और एकैडमिक्स में अच्छा रिकार्ड रखता था। मेरा चिंतन बहुत चला इसलिए उस रात मैंने भोजन नहीं किया। तब ही कुछ मित्र आकर मुझे कहने लगे कि हमें भी लगता था, आज आप ज़रूर चुने जाएँगे। यह सुन मेरी जान में जान आई और मैं शान्ति से जाकर सो गया।

इसके बाद मैंने पढ़ाई पर और ज्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया। मेरी आदत थी कि जो जिस दिन पढ़ाया जाता था उसको उस ही दिन पूरा कर फिर लेटता था अन्यथा मुझे नींद ही नहीं आती थी। सन् 2010 के अंत में मुझे ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हो गया। सन् 2011 में फिर से अवार्ड कार्यक्रम कालेज में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के कुछ दिन पहले लिखित परीक्षा आयोजित हुई तत्पश्चात् कालेज के चेयरमैन, डायरेक्टर तथा रजिस्ट्रार ने मेरा इन्टरव्यू लिया। इन्टरव्यू के दौरान मैं बिल्कुल निश्चिंत था, मैंने सब कुछ बाबा पर छोड़ दिया था, उनका आह्वान कर इन्टरव्यू दे दिया था।

इन्टरव्यू के बाद मैं सोचने लगा कि तीसरा स्थान मिले तो भी बहुत। कुछ ही समय बाद मुझे खबर मिली कि दो दिन बाद आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में मुझे द बेस्ट स्टूडेन्ट का अवार्ड प्रदान किया जाएगा। परन्तु अब मेरे लिए इस अवार्ड प्राप्ति की इतनी खुशी नहीं थी जितनी कि इस बात की कि मुझे तो भगवान ही मिल गये हैं। पहले मैं जिस अवार्ड के लिए इतना अशान्त हुआ, अब उसे पाने से पहले और पाने के बाद मेरी शान्ति की अवस्था हिली नहीं।

जब इच्छा थी तब नहीं मिला और जब इच्छा नहीं रखी तो मिल गया। इसलिए यह दिल कहता है, जिन्हें परमात्म अवार्ड मिल गया हो, उन्हें और किसी अवार्ड की क्या इच्छा! ❖

जाको राखे शिव भगवान...

● ब्रह्माकुमार नरेन्द्र गोयल, वरिष्ठ अधिवक्ता, अजमेर

बात पाँच साल पुरानी है। अजमेर से 15 कि.मी. की दूरी पर आयातित सीयलो गाड़ी को चलाते हुए मैं अकेले जा रहा था। पीछे से आ रहा ट्रक इण्डिकेशन देने के बावजूद मेरी चालक सीट पर चढ़ गया। ड्राइवर शराब पीये हुए था। मेरी गाड़ी के पहिये मुड़ गये, चेसिस और गियर बॉक्स ध्वस्त हो गये। चाबी के टुकड़े-टुकड़े हो गये। देखते-ही-देखते पूरी गाड़ी कबाड़ हो गई जिसे 17 रुपये प्रति कि.ग्रा. के हिसाब से बेचना पड़ा। शीशे टूट कर मेरे ऊपर आ गिरे थे परन्तु ऊपर वाले की छत्रछाया ऐसी थी कि मुझे खरोंच भी नहीं लगी। ऐसी भयावह स्थिति में मुझे अनुभव हो रहा था कि भगवान मुझे गोद में उठाये हुए हैं। भीषण त्रासदी में न घबराहट थी और न ही रिंचक मात्र भय। तुरंत पहुँचे थानेदार, शिवबाबा का बैज मेरे सीने पर देख कहने लगे, भगवान ने ही आपको बचाया है।

ड्राइवर को किया माफ

मात्र एक लाइन में मैंने एफ.आई.आर. दर्ज कराई कि मेरे साथ दुर्घटना घटी है परन्तु भगवान की कृपा से बाल-बाल बच गया। शराब की बदबू से भरे ड्राइवर को भी मैंने माफ कर दिया। वह तो मेरी गाड़ी को कुचल कर 70-80 मीटर तक उसे घसीटते हुए ले गया था जिससे वह पूरी तरह से चिर गई थी। कम्प्यूटराइज़्ड गाड़ी के चारों गेट दुर्घटना होते ही बन्द हो जाने चाहिएँ थे परन्तु दैवयोग से पीछे का एक गेट खुला रहा जिस कारण मैं मुसकराता हुआ बाहर निकल आया। गाड़ी को देखकर किसी को भी ख्याल भी नहीं हो सकता था कि चालक सीट पर बैठा व्यक्ति जीवित रह सकता है।

त्रासदी के बाद नया जन्म

सन् 1985 से मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूँ। तब से यह जीवन प्रभु की अमानत है। इस हादसे से पहले कभी भी मैंने अपना लौकिक या अलौकिक जन्मदिन नहीं मनाया था। सन् 1998 में ब्रह्माकुमारी बहन द्वारा पठित मुरली में सुना कि बच्चे, यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। तब मेरे मुख से अनायास ही निकला कि मेरा तो एक और भी जन्म होगा। इस त्रासदी से बचकर निकलते ही स्वत: अहसास हुआ कि यही तो एक और जन्म हुआ है। विगत पाँच सालों से इसी नए जन्म की यादगार को मैं अपना असली जन्मदिन मानकर सभी के साथ मनाता हूँ।

स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार

इस दुर्घटना के बाद से ही मैं

नियमित ईश्वरीय ज्ञान की क्लास करने लगा। रिश्ते-नातों में भी अलौकिकता के साथ हर प्रकार से सुधार आने लगा। तन-मन-धन से मैं बाबा और उनकी सेवा में व्यस्त हो गया। बाबा की याद में बैठते ही ईश्वरीय खुशबू मन में समा जाती है। अहंकार व क्रोध के समाप्त हो जाने से सारे संघर्ष जैसेकि जल गये। ऐसा लगता है कि सभी विकारों को बाबा ने ब्लाटिंग पेपर बन सोख लिया है। शरीर के दु:ख-दर्द ही समाप्त नहीं हुए बल्कि सामाजिक विरोध-अवरोध भी मिट गये। वकालत जैसे कार्य में व्यस्त रहते भी ऐसा लगता है कि मैं तो निमित्त मात्र हूँ। करनकरावनहार शिवबाबा ही सब कुछ करा रहे हैं। इस दुर्घटना के बाद से मेरे स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार होने

लगा। बी.पी., डायबिटीज आदि सामान्य स्तर पर आ गए। सार यही है कि यह त्रासदी मुझे बाबा के अधिक करीब ले आई जिससे जीवन की सब नकारात्मकताएँ, सकारात्मक बन गईं।

उस समय मेरी गाड़ी एल.पी.जी. गैस से चल रही थी। ऐसी स्थिति में घटी दुर्घटना में तुरन्त आग लग जानी चाहिए थी परन्तु यह समाचार सुन सभी लोग दाँतों तले अँगुली दबाते हुए कह उठे, जाको राखे शिव भगवान...। अब तो हर पल लगता है कि बापदादा मेरे साथ-साथ चल रहे हैं। सच में ईश्वरीय सहारा पाकर जीवन धन्य-धन्य हो गया। ❖

सहना अर्थात् पूज्य बनना

● विमला गोठवाल, निम्बाहेड़ा (राज.)

एक चरवाहे की बकरियाँ जंगल में चर रही थीं। खाली बैठे-बैठे उसने पास पड़े पत्थर पर, दूसरे तीखे पत्थर से प्रहार करना शुरू किया पर दो-तीन प्रहार खाकर वह पत्थर टूट कर दूर जा गिरा। चरवाहे ने एक और नया पत्थर लेकर उस पर जब तीखे पत्थर से चोटें करनी शुरू की तो वह नया पत्थर चोटें सहता गया और शाम होने तक एक मूर्ति के आकार में ढल गया। उसे वहीं छोड़ चरवाहा बकरियाँ लेकर घर लौट गया।

न सहने का पश्चाताप

रास्ते से गुजरते खेतीहर मजदूरों ने उस मूर्ति को देखा तो उनको लगा, यह तो चमत्कार हो गया। सुबह तो मूर्ति यहाँ थी नहीं, भगवान ने हमारे लिए भेजी होगी, अवश्य हमें इसके लिए मन्दिर बना देना चाहिए। सभी के सहयोग से मन्दिर बन गया और वह मूर्ति स्थापित हो गई। उस पर चढ़ाने के लिए उसी पत्थर पर नारियल तोड़े जाने लगे जो दो-चार चोटें खाकर टूटकर दूर जा गिरा था और उसे मन्दिर के दरवाजे पर रख दिया गया ताकि रोज उस पर नारियल तोड़े जा सकें। पूजा करके सब लोग लौट गए। आधी रात को मूर्ति ने अचानक दरवाजे पर रखे पत्थर से पूछा, कहो दोस्त! क्या हालचाल है? पत्थर बोला, कुछ मत पूछो दोस्त, तुमने तो एक दिन की चोटों को सहन कर लिया जिससे आज तुम्हारी पूजा की जा रही है और उस दिन मैं एक-दो चोटों से ही घबरा कर भाग खड़ा हुआ। अब मेरे शरीर पर रोज़ चोटें की जायेंगी अर्थात् नारियल फोड़े जायेंगे, इसका पश्चाताप मुझे जिन्दगी भर रहेगा।

ज्ञान-योग का बल आड़े वक्त काम आता है

कई लोग कहते हैं, हम ज्ञान में तो चलें पर सुबह की मीठी नींद खराब करके उठना, मनमर्जी वाली, जिह्वा के स्वाद वाली चीजों का त्याग करके खान-पान के नियमों में बंधना, यह सब हमसे नहीं होगा। लेकिन मुसीबतों से भरी इस दुनिया में जब कोई शारीरिक-मानसिक मुसीबत आती है और मन उसे झेल नहीं पाता तब स्वत: मुख से निकलता है कि उस समय से हमने ज्ञान द्वारा मन को मजबूत बनाया होता और सात्विक तथा स्वास्थ्यप्रद खान-पान लिया होता तो आज हमारी यह मुसीबत हम पर हावी न हुई होती। हम इसे सहन करने और पार करने में सक्षम होते। अत: जैसे बहुत काल से एकत्रित किया गया धन, आर्थिक शक्ति बनकर हमें आपातकाल में मदद करता है इसी प्रकार बहुतकाल से एकत्रित किया गया ईश्वरीय ज्ञान-योग का बल भी आड़े वक्त काम आता है। वर्तमान संगमयुग (कलियुग के अंत और सतयुग के प्रारंभ के बीच का समय) में थोड़ा-सा नियम पालन हमें यम के भय से मुक्त कर 21 जन्मों का सुख प्रदान करता है। ❖

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष...

महिला सशक्तिकरण

● ब्रह्माकुमारी नेहा, मुंबई (गामदेवी)

समाज के मुख्य अंग पुरुष और महिला हैं। महिलाओं के जीवन में बहुत संघर्ष होता है। दहेज की कुप्रथा, कन्या भ्रूण-हत्या, महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखना आदि-आदि अनेक समस्याओं का महिलाओं को सामना करना पड़ता है। सबसे अधिक महिला सशक्तिकरण शिवबाबा ने किया। शिवबाबा ने महिलाओं को आगे बढ़ाया और दैवी संविधान में लिखवाया कि इस विश्व विद्यालय की मुख्य संचालिका के रूप में सदा ही बहनें रहेंगी और अभी भी बहनों के द्वारा ही आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

स्त्री-धन का कानूनी हक

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रारंभ काल में संस्था में समर्पित बहनों के सामने नारी सुरक्षा से सम्बन्धित अनेक प्रकार की कानूनी बातें आईं। भोली दादी अपनी बेटी मीरा के साथ अपनी माँ के दिये हुए गहने लेकर यज्ञ में आई थी। उनके पति ने कोर्ट में केस दाखिल किया कि स्त्री अपने धन की मालिक नहीं हो सकती इसलिए वह अपने माँ-बाप का धन अपने पति को वापिस करे। कराची कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि स्त्री, स्त्री-धन की पूर्ण मालिक है, उसके इस धन पर पति का कोई हक नहीं है। इस प्रकार नारी को स्त्री-धन का कानूनी हक मिला।

स्त्री अपने शरीर की मालिक

दूसरे कानूनी हक के निमित्त बनी दादी प्रकाशमणि की बड़ी बहन सती दादी। उसके पति ने कहा कि मैं मेरी पत्नी का मालिक हूँ इसलिए उसके साथ हर प्रकार का व्यवहार करने का अधिकार मुझे है। उपभोग के लिए मेरी पत्नी मुझे मना नहीं कर सकती है। इस पर कोर्ट ने फैसला दिया कि प्रत्येक स्त्री अपने शरीर की मालिक है, अगर वह पवित्र रहना चाहती है या विकार में जाना नहीं चाहती है तो वह स्वतंत्र है और उसका पति उसे विकार के लिए बाध्य नहीं कर सकता। इस प्रकार, यह दूसरा कानूनी हक मिला।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए गृह-त्याग की स्वतन्त्रता

तीसरा कानूनी हक यह मिला कि स्त्री अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्वतन्त्र है। कई बहनें अपने परिवार के अत्याचारों के कारण उसे छोड़कर यज्ञ में आई थीं। उनके पतियों ने केस किया कि विवाहिता स्त्री, पति अथवा पति के परिवार की स्वीकृति के बिना घर नहीं छोड़ सकती। परन्तु सार यही रहा कि स्त्री अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपने पति या उसके परिवार की अनुमति के बिना भी घर का त्याग कर सकती है।

यू.एन.तथा यूनेस्को का महिला सशक्तिकरण में योगदान

संयुक्त राष्ट्र (U.N.) व यूनेस्को (UNESCO) द्वारा एक डॉक्यूमेंटरी फिल्म बनायी गई है जिसका नाम है गर्ल्स राइजिंग (Girl Rising)। इस फिल्म का विषय है, शिक्षा द्वारा नारियों में विश्व परिवर्तन करने की ताकत है। विश्व के 9 देशों की लेखिकाओं द्वारा लिखी हुई यह किताब यूनेस्को ने छपवाई है। यू.एन. तथा यूनेस्को भी महिला सशक्तिकरण के लिए सक्रिय हैं। बाबा का यह विश्व विद्यालय यू.एन. एवं यूनेस्को का गैर-सरकारी सदस्य है इसलिए हमारी जिम्मेदारी बनती है कि इस प्रकार के वैश्विक कार्य में अपना पूर्ण सहयोग दें। यू.एन. द्वारा यह भी लिखा गया है कि कन्याओं और माताओं की शिक्षा के ऊपर ज्यादा समय और धन खर्च किया

जाये, तो समाज में, विश्व में गरीबी का जो विषचक्र है वह नष्ट हो सकता है और महिलाओं को सामाजिक न्याय दिलाया जा सकता है। युवतियों की शिक्षा के लिए उन्होंने खास स्लोगन बनाया है, 'बैटर लाइफ बैटर फ्यूचर (Better Life Better Future)'। उन्होंने तय किया है कि महिला सशक्तिकरण के लिए देशों में बहुत प्रचार-प्रसार करना है।

इंग्लैण्ड की संसद में परिवर्तन

समाचार-पत्रों द्वारा मालूम पड़ा है कि इंग्लैण्ड की रूढ़िवादी संसद में भी परिवर्तन हुआ है। इंग्लैण्ड के वर्तमान प्रिन्स विलियम्स की युगल केट मिडलटन ने, जब वे माता बनने वाली थी, घोषणा की थी कि मेरा पहला बच्चा चाहे बेटा हो या बेटी, भविष्य में इंग्लैण्ड की राजगद्दी का वारिस बनेगा। सामान्य नियम यह रहा है कि युवराज ही राजगद्दी का अधिकारी होता है परन्तु अब परिवर्तन हुआ है कि प्रथम जो भी हो, बहन अथवा भाई, वही राजगद्दी का अधिकारी होगा। उन्होंने पुत्र को जन्म दिया पर उनकी उदारवादी घोषणा परिवर्तन का संकेत है। क्या भारत इसका अनुकरण करेगा? भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान की संसद में 342 सीटों में से 60 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं अर्थात् महिलाओं की सुरक्षा हेतु आरक्षण में पाकिस्तान भारत के आगे है।

गणमान्य महिलाओं का नारी-शिक्षा में योगदान

विश्व में अनेक गणमान्य महिलायें, नारी समाज के उत्थान के लिए मेहनत कर रही हैं, जैसे कि एंजोलिना जोली फिल्मों में अभिनय के साथ-साथ नारी उत्थान का कार्य भी कर रही हैं। वे अफगानिस्तान की अशिक्षित महिलाओं की शिक्षा के लिए बहुत खर्च कर रही हैं। काबुल और अफगानिस्तान के अनेक शहरों में नारी शिक्षा के अनेक संकुल उन्होंने खोले हैं। मलाला युसुफजई को भी उन्होंने दो लाख अमेरिकन डॉलर का दान दिया है और उसके द्वारा नारी शिक्षा के लिए भरपूर प्रयत्न कर रही हैं। लोकप्रिय गायिका मैडोना भी महिला शिक्षा के लिए बहुत मेहनत कर रही हैं। वे खुद अपने संगीत के चैरिटी शो द्वारा नारी शिक्षा के लिए धन दान करती हैं। मैडोना ने अपने घर के तीन तैलचित्र बेच कर उनसे प्राप्त हुई धनराशि को नारी उत्थान के कार्य में दिया है। वे मानती हैं कि मैं यह सहन नहीं कर सकती कि नारी अशिक्षित रहे और अपने अज्ञान के कारण अपमानित हो। उनकी मान्यता है कि विश्व की हरेक नारी को शिक्षा द्वारा अपनी उन्नति करने का पूरा अधिकार है और इस अधिकार को सभी पुरुषों को स्वीकार करना चाहिए। ऐसे ही वाशिंगटन की सुप्रसिद्ध महिला केट हडसन ने भी एक कम्पनी की स्थापना की है जिसके द्वारा वे महिलाओं को बिजनेस में तथा अन्य सभी प्रकार के कार्यों में सहयोग देती हैं।

भारत की प्रसिद्ध महिलाओं से अपील

यू.पी.ए. सरकार की अध्यक्षा बहन सोनिया गांधी, लोकसभा अध्यक्षा बहन मीरा कुमार, लोकसभा में विरोधी पक्ष नेता बहन सुषमा स्वराज तथा कई राज्यों की मुख्यमंत्री बहनें भारत की राजनीति में काफी सक्रिय हैं। इन सबसे तथा भारत की पूर्व राष्ट्रपति बहन प्रतिभा पाटिल से मेरी नम्र विनती है कि आप और हम सब मिलकर महिला सशक्तिकरण का कार्य करें। भारत की अन्य प्रसिद्ध महिलाएँ भी इस कार्यक्रम में अपना सहयोग दे सकती हैं। मनुस्मृति में लिखा हुआ है, यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तु रमन्ते तत्र देवा:। अगर हम सब बहनें मिलकर यह प्रयत्न करें तो मनुस्मृति की यह बात सिद्ध हो सकती है।

शिवबाबा ने बताया है कि सतयुग में बहनें विश्व महारानी के रूप में बहुत सुन्दर कारोबार करेंगी। इसलिए पहले श्री राधा का फिर श्री कृष्ण का नाम, पहले श्री लक्ष्मी का फिर श्री नारायण का नाम, पहले श्री सीता का फिर श्री राम का नाम लिया जाता है। ❖

गरीबी से छुटकारा

● ब्रह्माकुमार गणेश, कोलकाता (बांगूर)

मैं मूल रूप में दरभंगा जिले का रहने वाला हूँ। गरीबी के कारण माता-पिता मुझे पढ़ा नहीं सके। सन् 1972 में दस साल की आयु में कोलकाता में कार्य की खोज में आया। कोलकाता में एक परिवार में 15 रुपये महीने की तनख्वाह पर नौकरी की। अठारह साल की आयु तक कमा-कमाकर घर पैसे भेजता रहा। इसके बाद ठेला गाड़ी पर नाश्ते का सामान बनाकर बेचने लगा। यह धंधा दस वर्षों तक किया। बाद में एक दुकान किराये पर लेकर उसमें होटल खोला। होटल पर मैं लोगों को शाकाहार और माँसाहार दोनों प्रकार का भोजन बनाकर खिलाता था। होटल ठीक-ठाक चलता था।

शिव और शंकर का सत्य परिचय

सन् 2002 में मेरी दुकान पर एक भाई आया। वह ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाता था। मैंने होटल में बहुत देवताओं के चित्र लगा रखे थे। उसने पूछा, आप शिव भगवान के बारे में क्या जानते हैं? मैंने कहा, जैसे सब पूजा करते हैं, हम भी करते हैं। दुकान में एक चित्र लगा था जिसमें शंकर जी शिवलिंग का ध्यान कर रहे थे। उस चित्र की तरफ इशारा करके उसने पूछा, शिव और शंकर के बारे में आप क्या जानते हैं? मैंने कहा, वही शिव हैं, वही शंकर हैं, दोनों एक ही हैं। उसने कहा, शिव और शंकर अलग-अलग हैं। यह बात मुझे तीर की तरह लग गई। मैं शिव और शंकर की बहुत भक्ति करता था। हर साल वैद्यनाथ धाम जाता था और शिव पर कावड़ चढ़ाता था। मैंने पूछा, अलग-अलग कैसे हैं? उसने कहा, आश्रम पर चलो। मैं उसके साथ बांगूर (कोलकाता) आश्रम में आ गया। वहाँ सात दिन का कोर्स किया, बहुत अच्छा लगा। निश्चय हो गया कि शंकर देहधारी हैं और शिव निराकार हैं। शिव रचयिता हैं और शंकर रचना हैं।

शाकाहार का पालन

इसके बाद मैं रोज़ सुबह बाबा की मुरली सुनने सेवाकेन्द्र पर आने लगा। मुरली सुनते-सुनते मन पवित्र होने लगा। मैं माँसाहारी था पर ईश्वरीय ज्ञान सुनने के बाद मैं शाकाहारी बन गया। मेरे होटल पर भी माँसाहारी भोजन बनता था। मैं भी बनाता था, नौकर भी बनाता था। ज्ञान में आने के बाद निश्चय किया कि ऐसा भोजन न खाना है, न बनाना है और न बेचना है। जब मैंने माँस वर्जित कर दिया तो मेरे तीनों नौकर काम छोड़कर चले गये। उन्होंने कहा, यह नहीं बनेगा तो हम

काम नहीं करेंगे। वे खुद भी खाने-पीने वाले थे। मैंने कहा, ठीक है, जाओ, मैं होटल अपने आप चला लूँगा। हफ्ता भर होटल बंद रहा। फिर बाबा ने बहुत हिम्मत दी और मैंने उसे चालू कर दिया।

पहले से भी ज्यादा चलता है धंधा

अगले दिन एक शाकाहारी नौकर को बाबा ने अपने आप भेज दिया। जो तीन गये थे, उनमें से भी दो वापस आ गये। मुझे लोगों ने कहा, यह ओमशान्ति में जाकर पागल हो गया है। ऐसे शाकाहारी भोजन बनायेगा तो होटल चलेगा नहीं। मैंने कहा, चले या न चले, मैं चिन्ता नहीं करूँगा। भगवान मेरे साथ है, जरूर चलेगा। एक हफ्ता तकलीफ हुई, फिर होटल खूब चलने

लगा। मैं जिस इलाके में रहता हूँ, उसमें सभी माँसाहारी होटल हैं। एक मेरा ही शाकाहारी है। इसलिए होटल खूब चलने लगा। जो आदमी कहता था, होटल नहीं चलेगा, वह भी भोजन लेने वालों की लाइन में लगकर मेरे होटल से भोजन लेता है और कहता है, क्या चमत्कार हो गया जो तुम्हारा काम इतना बढ़ गया।

सारा चमत्कार बाबा का है, बाबा ने मुझे काँटे से फूल बना दिया। हिम्मत का एक कदम बढ़ाओ तो हजार कदम बाबा मदद करते हैं। अभी बहुत खुशहाल हूँ। हर साल बाबा से मिलने मधुबन जाता हूँ। अभी बाबा ने गरीबी दूर कर दी है।❖

न भूलें करावनहार की महिमा

– प्रकाश लोहिया, पूर्व प्रबंधक, राजस्थान बैंक, डीग (भरतपुर)

हम रहने वाले से मोह न करके, जाने वाले से मोह करते हैं, यही बंधन है। सच्ची चीज़ कभी बदलती नहीं। रोटी, कपड़ा, मकान बचे रहते हैं, हम चले जाते हैं। फिर भी निर्वाह की चिन्ता करते हैं, यही आश्चर्य की बात है। कहा भी गया है,

मुर्दे को भी मिलत हैं लकड़ी, कपड़ा, आग,
जीवित जो चिन्ता करें तिनके बड़े अभाग।

जब सारी चिन्ताएँ बाबा को दे ही दीं तो पल-पल मृत्यु का भय और मेरे मरने के बाद क्या होगा, इस तरह का चिन्तन व्यर्थ है। कठिन से कठिन अवस्था में भी बाबा याद रहने चाहिएँ। पांच ज्ञानेन्द्रियाँ संसार के पाँच गवाह हैं। पाँचों अलग-अलग बात बताते हैं। आपस में इनकी बात नहीं मिलती, फिर इनका क्या भरोसा? अन्त:करण की शुद्धि की पहचान है – नाशवान में आकर्षण समाप्त हो जाना। जब तक संसार से अलग नहीं होते, तब तक संसार के दोष नहीं दिखते। संसार का काम तो चलता रहेगा, रुकेगा नहीं। जैसे अन्न, जल, औषध खुद ही को लेनी होती है, ऐसे ही अपना कल्याण भी खुद को करना है।

हरेक को अपनी निन्दा बुरी लगती है, प्रशंसा अच्छी। निन्दा दूसरे कोने से हो या समीप से हो, निन्दा तो निन्दा ही है, उस पर हमारा क्या वश चलता है, उसे रोक सकते नहीं। उससे द्वेष करने में, उसे बुरा समझने में हमारा लाभ नहीं है। वस्तुत: निन्दा करने वाला हमारे पापों का नाश करता है क्योंकि प्रशंसा करने वाला तो अहंकार को जन्म देने वाला उत्प्रेरक भी साबित हो सकता है। जो किसी को दुख नहीं देता उसको देखने मात्र से पुण्य हो जाता है।

परमात्मा को सुनते हैं, संसार को देखते हैं। किसी-किसी को परमात्म दर्शन और अनुभव भी हो जाता है। परमात्मा में कभी परिवर्तन हुआ हो, ऐसा हमने सुना नहीं। संसार निरन्तर बदलता है। संसार इतना तेज़ी से बदल जाता है कि उसे दो बार नहीं देख सकते। बीज को उबाल दिया जाए या भून दिया जाए तो फिर बीज, बीज न रह करके खाद्य सामग्री बन जाता है और उस बीज से कुछ भी पैदा नहीं होता। ऐसे ही विकार तथा व्यसन, धर्म के अंकुर को जला देते हैं। ज्ञान का सार यही है, भाव सबके हित का रखो और याद बाबा को करो।

माँ लड्डू सब बालकों को देती है पर थप्पड़ अपने बालक को ही लगाती है। अपनेपन में जो प्यार है, वह लड्डू में नहीं है। दुख आने पर पुराने पापों का नाश होता है। मन में ज्ञान का प्रकाश होने पर हम विकारों पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। भगवान को अपना मानने की ज़िम्मेदारी हमारी ही है। भगवान ने तो हमें अपना मान ही रखा है। ❖

मैं और मेरापन

● कन्हैया लाल कलवानी, चूरू (राजस्थान)

जब हम कहते हैं कि मेरे पैर में दर्द हो रहा है या मेरा सिर भारी है तो उस समय यह तो नहीं कहते कि मैं पैर में दर्द कर रहा हूँ/हो रहा है अर्थात् शरीर अलग है और मैं शरीर से भिन्न कोई अलग ही सत्ता हूँ। कई बार हम व्यवसाय में अपना परिचय इस प्रकार देते हैं कि मैं वकील हूँ, डाक्टर हूँ, इन्जीनियर हूँ...। घर में बच्चों के लिए पिता हूँ, पत्नी के लिए पति, माँ के लिए पुत्र और मित्र के लिए मित्र। ये तो सभी शरीर के संबंध हैं, फिर मैं कौन हूँ? यह एक पहेली है जिसका उत्तर है कि मैं एक आत्मा हूँ।

हम सृष्टि पर मेहमान हैं

इंसान 'मैं और मेरा' इन शब्दों के प्रयोग से ऊँचा भी उठ सकता है और नीचे भी गिर सकता है। 'मैं पवित्र आत्मा हूँ' इस स्वमान वाला 'मैं' उन्नति दिलाता है और बकरे की तरह मैं-मैं करने से कसाई के हाथों मरना पड़ता है अर्थात् अभिमान और अपमान रूपी मैं से आत्मा का पतन हो जाता है। वास्तव में मैं आत्मा चेतन हूँ और मुझमें मन, बुद्धि और संस्कार हैं। मन सोचने की शक्ति, बुद्धि निर्णय करने की शक्ति और संस्कार आत्मा पर कर्मों के प्रभाव का नाम है। शरीर प्रकृति द्वारा प्रदत्त है और पांच तत्वों से बना है। हम इस लोक में थोड़े समय के लिए मेहमान हैं। हमारा घर तो आकाश तत्व से भी पार परमधाम है, अब घर जाना है... इस तरह के संकल्प खाना खाते समय, कार्य व्यवहार में आते स्मृति में रहें तो हम हलके रहते हैं।

रहमदिल बन क्षमा कर दें

यदि कर्मक्षेत्र पर कोई हमें कहे, तुम किसी काम के नहीं, तुम्हारा स्वभाव खराब है, तुम्हारी किस्मत ही खराब है आदि-आदि, तो ज़रा सोचिए, सामने वाला किसे कह रहा है। वह मुझ आत्मा को तो जानता नहीं, इस शरीर को कह रहा है। अत: आत्मा अर्थात् मैं तो इन शब्दों से परे हूँ। हो सकता है, किसी पूर्व जन्म में सामने वाली आत्मा को हमने ऐसा कहा हो तभी कर्मफल के रूप में यह हिसाब आज चुक्ता हो गया। इसके लिए शिवबाबा को धन्यवाद दें। प्रतिक्रिया देकर नये विकर्म ना बनाएँ। यदि पूर्वजन्म का हिसाब न भी हो तो भी एक सूक्ष्म बात यह भी याद रखें कि सामने वाली आत्मा हमारी चाहे कितनी भी ग्लानि करे, आने वाले युगों में वह हमारी भक्ति भी अवश्य करेगी क्योंकि किये कर्म का हिसाब चुकाना पड़ता है। हम रहमदिल का संस्कार धारण कर उसे क्षमा कर दें और याद रखें, क्षमा महान आत्माओं का विशेष गुण है।

मन की डोर खुद संभालें

शिवबाबा के महावाक्य याद करें कि सभी निर्दोष हैं, किसी का कोई दोष नहीं। मम्मा का भी यही कहना था, निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा होय। सामने वाला मेरा शुभचिंतक है। मुझे समय के पहले अपने को सम्पूर्ण बनाना ही है, यह दृढ़ संकल्प करें। निंदा ने ही कई बार इतिहास बदला है जैसे कि तुलसीदास की पत्नी यदि अपमान सूचक शब्द न कहती तो वे महान शास्त्र रामायण की रचना नहीं कर पाते। हमें शिवबाबा ने श्रेष्ठ स्वमान दिये हैं कि आप श्रेष्ठ आत्मा हो, आप विशेष आत्मा हो यदि इन स्वमानों को हम अपने में धारण नहीं कर पाये और आत्मग्लानि करते रहे कि मैं अच्छा नहीं हूँ, तो मानो भाग्यविधाता के विरुद्ध जा रहे हैं, मानो यह कह रहे हैं, बाबा, आप सही नहीं हो, सच तो यह है कि मैं बेकार हूँ। अत: याद रखें, दूसरों से प्रभावित होने का अर्थ है, हम उनके हाथों की कठपुतलियां हैं। वो चाहें तो हमें हंसाएँ या फिर रुलाएं। अपने मन की डोर अब हम खुद संभालें।

गुण है प्रभु की देन

यदि हम ही अपने को कहते हैं, मेरा भाग्य अच्छा नहीं है, तो इस सोच को बदलें। जैसे लोहे को लोहा काटता है ठीक उसी प्रकार हीन संकल्प को समर्थ संकल्प काटता है। उस समय प्यारे बापदादा द्वारा दिए हुए

स्वमानों की लिस्ट निकालें और याद करें कि मैं कौन-सी आत्मा हूँ... मैं वो श्रेष्ठ आत्मा हूँ जिसे देखने के लिए भक्त तरसते हैं। मैं महान आत्मा सो देवात्मा हूँ, मेरा भाग्यविधाता स्वयं भगवान है और मेरा भाग्य सर्वश्रेष्ठ है, मैं बाबा का भाग्यशाली सितारा हूँ। यदि कोई कहे, आप समझदार हैं और आपका सिखाने का तरीका अच्छा है, आप सुंदर हैं तो ज़रा सोचिए, सामने वाला इस शरीर की प्रशंसा कर रहा है। यदि स्वयं के प्रति सूक्ष्म अभिमान आने की सम्भावना है तो उसी समय उस प्रशंसा को प्रभु समर्पित कर दें। इससे वो कई गुना होकर हमें भविष्य में प्राप्त होगी तथा याद रखें कि जो भी गुण हममें है वह प्रभु का ही दिया हुआ है।

मनोदशा स्थिर रखें

मैं और मेरेपन से अभिमान और अपमान आता है, ऐसे गलत दृष्टिकोण के कारण मनचाहे परिणाम नहीं मिलते अत: परिस्थिति भले ही कैसी भी क्यों न हो, अपनी मनोदशा को सदा स्थिर रखें। हमेशा याद रखें कि मैं आत्मा इस परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर सकती हूँ क्योंकि कल्प पहले की तरह विजय के पार्ट को मुझे ही दोहराना है। अमृतवेले उठते वा रात्रि को सोते सच्चे मन से बाबा को मैं और मेरापन अर्पित करें तथा लिखें कि किन परिस्थितियों में ये विकार आते हैं और इन पर विजय कैसे प्राप्त की जाये। कई बार सेवा में भी मैं और मेरापन आ जाता है। मैं यह सेवा नहीं करूँगी या मुझे तो यही सेवा अच्छी लगती है। याद रखें, हमें तो सोलह कला सम्पूर्ण बनना है। अगर एक सेवा होती है और दूसरी नहीं तो ज़रूर कुछ कमी है, उसे ज्ञानबल और योगबल से दूर करें। यदि हर तरह से हम सेवा नहीं कर पाए तो कौन मानेगा कि हम सर्व गुण सम्पन्न हैं अर्थात् जो बाबा से 'हाँ जी' का पाठ सीखा है उसे कैसे पूरा कर पायेंगे।

तुलना करें केवल बाबा के साथ

यदि मुझमें तुलना करने का संस्कार है जैसे कि मैं तो बहुत बुद्धिमान हूँ, सामने वाला मूर्ख है, यह मेरी प्रिय किताब है, इसे मैं नहीं दूंगा, सामने वाले में भाषण करने की अच्छी कला है, मेरे शरीर का रंग काला है और मेरा मित्र गोरा है, तो इसका मतलब है कि हमारे अंदर हीन भावना या अहम् भावना ने जन्म ले लिया है। अगर हम समय रहते सचेत न हुए तो इस तुलना में संगमयुग का समय हाथ से निकल जाएगा अत: तुलना ना ही करें तो बेहतर है। यदि तुलना करने का संस्कार पक्का हो तो अपनी तुलना सिर्फ और सिर्फ ब्रह्मा बाबा से ही करें कि बाबा तो निष्काम सेवाधारी हैं और उन्होंने हड्डी-हड्डी शिव बाबा व माताओं की सेवा में समर्पित कर दी, तो मैंने कितनी सेवाएं कीं? क्या मेरे संस्कार बापसमान बने हैं? क्या सामने वाले को जो भाषण आता है वो स्वयं उसकी देन है या प्रभु की देन है? हम अपने आप से इस तरह प्रश्न पूछें और जो भी कमियाँ स्वयं में समझते हैं, चार्ट द्वारा अपना पोतामेल बाबा को देकर चेक करते रहें और स्वयं को बापसमान चेंज करते रहें। याद रखें, कल हमारा नहीं है बल्कि आज हमारा है और अभी नहीं तो कभी नहीं।

❖

नारी का पतन...पृष्ठ 3 का शेष...

नारी का जीवन है। अपने को शरीर समझने से ही नारी अबला बनी है। यदि वह अपने को मन, बुद्धि व संस्कारों से युक्त शुद्ध आत्मा समझे और आत्मस्मृति में स्थित हो जीवनपथ पर चले तो उसे अपने सच्चे शक्ति-स्वरूप का अनुभव होगा। वह अबला न रह कर पुरुषों को भी बल प्रदान करने वाली होगी। उसे और समाज को यह पता चलेगा कि नारी 'भोग्या' नहीं बल्कि 'पूज्या' है जिसकी पूजा आज भी भारतवर्ष में दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी रूप से हो रही है। प्रत्येक नारी को यह रूप धारण करना है और वह कर सकती है क्योंकि वह उसी का रूप है। ❖

मन को दबाओ नहीं, समझाओ

● ब्रह्माकुमार साहनी, साकेत नगर, भोपाल

इच्छा, कामना एवं संकल्प करना मन की स्वाभाविक प्रक्रिया है, फिर क्या इस प्रक्रिया को रोका जा सकता है अथवा इस पर अंकुश लगाया जा सकता है? अनुभव कहता है कि कोई इच्छा अथवा कामना यदि दबाई जाती है तो वह उस समय भले ही दब जाये लेकिन कालान्तर में कई गुणा अधिक बलवती हो कर हमारे मन-मस्तिष्क पर छा जाती है। इसलिए हम इच्छाओं-कामनाओं अथवा मन के सकल्पों को दबाएँ नहीं बल्कि मन को विवेकपूर्वक समझा कर नई दिशा दें।

सुन्दर चीज़े देंगे तो गन्दी को छोड़ देगा

जैसे एक छोटा चंचल बच्चा किसी हानिकारक अथवा गंदी चीज़ को खिलौना समझ कर खेल रहा है और हम उस के कल्याणार्थ चाहते हैं कि वह उसे छोड़ दे। इसके लिए तो उस बच्चे को समझा-बुझाकर एक सुन्दर-सा नया खिलौना देना होगा। तब वह बच्चा खुशी-खुशी उस गंदे, हानिकारक खिलौने को छोड़ देगा। लेकिन यदि बच्चे को भय दिखाकर अथवा बलपूर्वक खिलौना छीनने की कोशिश की जाएगी तो या तो बच्चा खिलौना देगा नहीं और यदि किसी तरह दे भी देगा तो हमारी अनुपस्थिति में पुनः उसे ढूँढ़कर, उसी से खेलने लगेगा। बस, यही स्थिति हमारे चंचल मन रूपी बच्चे की भी है। उसे कहीं से यदि ज़बरदस्ती हटाया जाएगा तो वह अधिक बलपूर्वक उसी ओर जाएगा।

मन को विवेक रूपी बाँध से रोकें

जैसे नदी में आई बाढ़ की दिशा, बांध आदि बनाकर बदल दी जाती है जिससे जन और धन की हानि भी नहीं होती और जल का जन-कल्याणकारी कार्यों में सदुपयोग भी कर लिया जाता है, ठीक उसी प्रकार, हम अपने मन को विवेक रूपी बांध से नियंत्रित कर उसे सही दिशा दें जिससे कि वह नकारात्मक और व्यर्थ संकल्पों के बदले सकारात्मक, शुद्ध एवं पवित्र संकल्प करे। विषय चिंतन मन का बहुतकाल का अभ्यास-सा बन गया है। मन का यह भी स्वभाव है कि वह जिस वस्तु में अथवा चिंतन में लग जाता है तो उसे सहज छोड़ना नहीं चाहता है इसलिए हम मन को विषय चिंतन से हटा कर परमात्म चिंतन में लगाने के लिये धीरज, स्नेह और विवेक से काम लें।

मन को समझाएँ, न कि दबाएँ

हम मन को लक्ष्य दें कि वह विकारी प्रवृत्तियों को छोड़ कर शान्ति, प्रेम एवं आनंद के मौलिक स्वरूप को पुनः धारण करे। मन को समझा-बुझाकर अभ्यास एवं वैराग्य से परमात्मा के चिंतन में लगायें, न कि उसे धमकाएँ अथवा दबाएँ। दिन में दो-तीन बार और विशेष अमृतवेले यह अभ्यास करायें, तो मन स्वयं ही परमात्म-स्मृति में अभ्यासरत होने लगेगा।

मन के ईश्वरीय स्मृति में लग जाने से अलौकिक शक्ति प्राप्त होगी। विस्मृति, स्मृति में बदलने लगेगी। तीसरा नेत्र खुल जायेगा और स्वयं की, अपने पिता की और अनादि ड्रामा की पहचान प्राप्त होने से सदाकाल के लिए अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने का भाग्य प्राप्त होगा। मन को सहज रीति से ईश्वर में लगाने की निःशुल्क शिक्षा स्थानीय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से प्राप्त हो सकती है। ❖

विशेष सूचना

नए वर्ष 2014-15 के लिए ज्ञानामृत पत्रिका का वार्षिक शुल्क 100/- रहेगा। एकाउंट के हिसाब से अप्रैल से चूंकि नया वर्ष शुरू होता है इसलिए अप्रैल 2014 से बनने वाले नए सदस्यों से शुल्क 100/- वार्षिक लिया जाएगा।

काश ! बाबा पहले मिला होता

● मीना गोस्वामी, आगरा (दयालबाग)

अपने मन के विचारों को व्यक्त करने की क्षमता और प्रेरणा मुझे परमपिता परमात्मा शिवबाबा से प्राप्त हुई है। आज से चार वर्ष पूर्व अनायास ही अवसाद से घिर गयी। मन एकदम शून्य हो गया। कोई अच्छा विचार उसमें कौंधता नहीं था। दुनिया जैसे झूठी लगने लगी पर फिर भी मैं अपने परिवार के शुभ की चिन्ता में व्यग्र-सी रहती। हाथ से जैसे सब कुछ छूट रहा था। भीड़ में भी नितान्त अकेली जैसी थी। अवसाद के कारण मन में भय ज्यादा रहने लगा, भय का कोई आकार-प्रकार नहीं होता, यह तो अहसास होता है। इसे न तो किसी को बताया जा सकता है, न कोई कम कर सकता है। भय ने धीरे-धीरे अदृश्य परछाइयों का रूप ले लिया और घर के हर कोने में अपना डेरा जमा लिया। आँखें बन्द करते ही काली, भयानक परछाइयाँ चल-चित्र की भाँति मेरी आँखों के सामने नाचतीं। इन भयानक परछाइयों से अपने परिवार को बचाते-बचाते मैं जैसे हार रही थी, खुशहाली का सम्बल मुझसे छूटता जा रहा था। मुझे लगता था कि कोई अनिष्ट हो, इससे पूर्व मैं अपने आप को समाप्त कर लूँ। मैं मृतेष्णा की ओर धीरे-धीरे बढ़ रही थी और कहीं कोई विकल्प नज़र नहीं आ रहा था।

मन व्यग्र हो उठा बाबा से मिलने के लिए

तब अन्धकार में एक ज्योति चमकी। मेरे घर के सामने एक बहन रहती हैं। मैं उनका बहुत मान करती हूँ। उनको मैंने अपनी परेशानी बताई। उन्होंने मुझे शिव बाबा का सत्य परिचय दिया कि ''कालों का काल है शिव बाबा, विघ्न विनाशक है शिवबाबा''। मैं मन्त्रमुग्ध-सी उनकी अमृतमय वाणी को सुनती रही, उन्होंने आश्रम ले चलने का आश्वासन भी दिया। जब तक उनके सामने रही तब तक शान्ति मिली, अवर्णनीय सुख मिला, हल्की भी रही, लगा कि भय का दानव दूर भाग गया है लेकिन जैसे ही घर आई, मृतेष्णा ने पुन: मुझे चारों ओर से घेर लिया। मंत्र पढ़ रही थी पर सब कुछ गड़बड़ हो रहा था। मैं पुन: मौत के करीब जा रही थी, शिरायें शून्य-सी हो रही थीं, परिवार बिखरने के कगार पर था। इतना सहते-सहते, दुनिया भर का पूजा-पाठ करते-करते भी आशा की कहीं किरण नज़र नहीं आ रही थी। मेरा मन बाबा से मिलने को व्यग्र हो उठा।

अंधकार समाप्त हो गया

तभी सत्गुरुवार का दिन आ गया, कुछ बहनें आश्रम जा रही थीं। मैं भी दौड़ कर शामिल हो गयी। पैरों में जैसे पंख लग गये। सुध-बुध बिसराई हुई पहुँच गयी बाबा से मिलने। आश्रम वाली दीदी ने स्नेह से देखा और बैठने को कहा। यन्त्र-चलित-सी बैठ गयी। मैंने समस्या बताई तब उन्होंने मुझे सात दिन का कोर्स करने की सलाह दी, ध्यान की प्रक्रिया समझाई और शुभ दृष्टि दी। कोर्स पूरा करने में मेरे पड़ोस की एक बहन और मेरे परिवार ने पूरा सहयोग दिया। फिर आध्यात्मिक क्लास प्रारम्भ कर दी। आश्रम की दीदी मुझे जीवन का आधार लगने लगी क्योंकि बाबा तक जाने का मार्ग तो उन्होंने ही प्रशस्त किया। उन्होंने कहा कि मुरली

(ईश्वरीय महावाक्य) सुनोगी तथा बाबा का ध्यान करोगी तो बृहस्पति की दशा (भगवान की दुआ) बैठेगी अन्यथा राहू-केतू (विकार) घेरेंगे। बाबा अपने बच्चों को दु:खी नहीं देख सकते, वे अपने बच्चों को ढूंढ लेते हैं और हाथ पकड़ कर जीने की राह दिखाते हैं। अब भय, चिन्ता, अवसाद का अन्धकार समाप्त हो गया है, शिवबाबा की शुभ दृष्टि पूरे परिवार पर है, सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा है। बाबा ने सबको अपना लिया है। अब तो यही कहती हूँ, काश! बाबा पहले मिल गया होता। ❖

तोल-तोलकर बोल

● ब्रह्माकुमार ज्योति भाई, बल्लभगढ़

कहते हैं, जैसा अन्दर का भाव होता है, वैसी ही भाषा होती है। कई कहते हैं, बोल मेरे मुख से निकल गया, मेरा भाव ऐसा नहीं था परन्तु ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि जो मन में होता है वही मुख पर आता है। मुख से निकला बोल किसी का हौसला बुलन्द भी कर सकता है और पस्त भी इसलिए तोलकर बोलें। बोल में गम्भीरता के साथ रमणीकता भी हो। गोली का घाव भर सकता है पर बोली का जल्दी नहीं भरता। हमारा मुख 'धनुष' की तरह है और बोल 'बाण' की तरह हैं। जैसे धनुष से निकला बाण वापिस नहीं लौटता ऐसे मुख से निकले शब्द लौटकर नहीं आ सकते इसलिए हमें युक्ति-युक्त एवं योगयुक्त होकर बोलना है।

क्या सुनना है, क्या नहीं, चयन करना जरूरी

जो व्यक्ति अपनी वाणी पर संयम रखना जानता है वो जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकता है। वह सबका स्नेह और सम्मान पाता है। हम जितना बोलें उससे दो गुणा सुनें इसलिए प्रकृति ने हमें जीभ एक और कान दो दिए हैं। एक अच्छा श्रोता ही एक अच्छा वक्ता बन सकता है। दुकानें हफ्ते में नहीं तो महीने में एक बार अवश्य बन्द हो जाती हैं लेकिन हमारे दो कान सदैव खुले रहते हैं इसलिए क्या सुनना है और क्या नहीं सुनना है, इसका चयन भी हमें करना आना चाहिए। अधिक बोलने वाला मनुष्य दोस्तों को 'पीड़ा', दुश्मनों को 'फायदा' और स्वयं को 'हानि' पहुँचाता है। जितना हम अधिक बोलेंगे उतना ही हम फंसेंगे। हर समय जवाब देने का नहीं होता, कभी-कभी मौन भी अपने आप में एक जवाब होता है और कभी-कभी मौन भी शस्त्र का कार्य करता है। अधिक बोलकर किसी शत्रु को मित्र नहीं बनाया जा सकता परन्तु अधिक बोलने से मित्र भी शत्रु बन सकता है।

अच्छी बात जहाँ भी मिले, धारण करें

मानव की पहली झलक उसके 'चेहरे' से मिलती है, दूसरी झलक उसके 'बोल' से मिलती है और तीसरी झलक उसके 'कर्म' से मिलती है। सात्विक अन्न, नम्र व्यवहार और अपने से श्रेष्ठ के संग में बैठने से वाणी पर नियन्त्रण हो जाता है। आध्यात्मिक पुस्तकों का पठन और सीखने की ललक भी इसमें मदद करती है। जहां से भी अच्छी बात मिले उसे धारण अवश्य करें। सार्थक बातों को धारण करने से व्यर्थ धीरे-धीरे स्वत: निकलता जाता है और हम समाज में अनमोल बन जाते हैं। जितना हम सारयुक्त बोलेंगे, लोग उतना ही ज्यादा ध्यान से सुनेंगे और महत्व देंगे। बोल सहज और सरल होंगे तो सबको खुशी देंगे। ऐसे बोल महावाक्य बन जायेंगे और हम प्रेरणा-स्रोत बन जायेंगे। ❖

रूहानी ज्ञान का जादू

● ब्रह्माकुमार शंकर, दादावाड़ी, कोटा

मैं पिछले 25 सालों से कोटा में कपड़े की दुकान पर काम करता हूँ। ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले मैं शराब का काफी सेवन करता था। रविवार को दुकान की छुट्टी होती तो सुबह की शुरूआत शराब से होती, शराब के बिना मुझे नींद नहीं आती थी। मेरे माता-पिता ने मुझे सुधारने का काफी प्रयास किया। जगह-जगह पूछने जाते रहे, कहीं से कुछ फर्क नहीं पड़ा।

भगवान से मांगी मौत

मेरी बहन को ईश्वरीय ज्ञान में चलते पाँच-छह साल हुए। एक दिन उसने ब्रह्माकुमारी बहनों को घर आने का निमंत्रण दे दिया। उस दिन भी मैंने सुबह से ही शराब का सेवन कर रखा था। घर आये सफेद वस्त्रधारियों को देख मैं दंग रह गया। ब्रह्माकुमारी दीदी ने मुझे काफी समझाया, उन्होंने मुझे सेन्टर पर चलने को कहा। मैंने उनसे कहा, मैं शाम को आता हूँ पर शाम को सेन्टर न जाकर मैं शराब पीने लगा। उस दिन मुझे कुछ अलग प्रकार का अनुभव होने लगा। ऐसा लग रहा था कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। उसी रात शराब का सेवन अधिक करने के कारण मुझे नींद नहीं आई। करवट बदल-बदलकर सुबह के ठीक चार बजे मैं बाथरूम के लिए उठा। नीचे फर्श पर सांप, चूहे, बिल्ली, नेवला आदि दिखाई देने लगे। फिर एक आवाज सुनाई दी, उतर नीचे, बहुत ज्यादा शराब पीनी आ गई, मैं पिलाता हूँ जी भर। आठ दिन के अंदर तुझे क्या-क्या दिखाता हूँ देख, अभी तो कुछ भी नहीं दिखाया। टीवी के स्पीकर से यह आवाज आ रही थी। ऐसी चीज़ें देखने के बजाय मैं भगवान से मौत माँग रहा था। उसी दिन मैं सेन्टर पर गया और बाबा के ट्रांसलाइट के सामने शराब, मांस, जर्दा, गुटखा – ये सब चीज़ें छोड़ने की कसम खा ली। फिर भी मैंने एक गलती की। सब छोड़ने की कसम खाने पर भी जर्दा, गुटखा छिपकर खाता था।

शराबी के बजाय समझाने वाला

बुधवार के दिन गुटखा, जर्दा दोनों मिलाकर, खाकर सेन्टर पर गया। वहाँ सफाई का कार्य चल रहा था। झाड़ू-पोंछा के बाद बाबा की ट्रांसलाइट पोंछनी थी। ट्रांसलाइट पोंछते ही मेरे शरीर में सूई जैसी चुभन हुई। पहले तो मैं समझ नहीं पाया, बाद में सोचा, शायद जर्दा, गुटखा खाने की वजह से है। उसी दिन शाम को दुबारा सेन्टर पर आया। सेन्टर के बाहर जर्दा, चूना, गुटखा तीनों फेंक दिये। वो दिन और आज का दिन कभी हाथ नहीं लगाया। ये सब छूटने के बाद जीवन में बहुत फर्क आ गया है। अब तक जो लोग मुझे अपने पास खड़ा नहीं होने देते थे, वे ही आज बहुत मिन्नतें करते हैं कि बैठो ना, चले जाना। पहले मुझसे शराब की बू आती थी, लोग सोचते थे कि जावे। अब रूहानी खुशबू महकने लगती है। बाबा ने मुझे न्यारा भी बना दिया, प्यारा भी बना दिया। मैं बाबा का अहसान नहीं भुला सकता। अगर कोई शराबी दोस्त, शराब के लिए दस रुपये माँगता है तो मैं कहता हूँ, शराब के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं, तू कचौरी खा ले, भले ही पैसे वापस नहीं देना। वे लोग सोचते हैं कि पहले यह शराब के लिए पैसे माँगता था, आज हमको समझाता है। ऐसा कौन-सा जादू हो गया है इसको। बाबा के रूहानी ज्ञान का जादू चल गया है। ❖

लगा दिए उमंग-उत्साह के पंख

● ब्रह्माकुमार स्वरूप, चक्रधरपुर (झारखंड)

मुझे अतीन्द्रिय सुख और शुद्ध नशा है कि कोटों में कोई, कोई में भी कोई के रूप में शिवबाबा ने अपना बच्चा बनाया और अब हाथ में हाथ रख अपने साथ का सदा अनुभव कराते हुए उमंग-उत्साह के पंख लगा दिये हैं।

कोलकाता सॉल्टलेक स्थित ईस्टर्न योगा रिसर्च एंड फीजिकल इंस्टीट्यूट का प्रशिक्षु होने के कारण मेडिटेशन के बारे में सुना था। चक्रधरपुर अंचल कालोनी में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से सेवाकेन्द्र खुलने की जानकारी मिलते ही मन में ज्ञान प्राप्ति की उम्मीद जग गयी, वहां पर मेरी मुलाकात एक श्वेत वस्त्रधारी बहन से हुई। उन्होंने मुझे इस विश्व विद्यालय के बारे में कुछ जानकारी दी और सात दिन का कोर्स पूरा करने की नेक सलाह दी। मन में ढेर सारे प्रश्न उमड़ने लगे कि इनकी कड़ी शर्तें होंगी एवं शुल्क भी ऊंचा होगा पर बहन जी ने मेरी जिज्ञासा को शांत करते हुए स्पष्ट कर दिया कि यहां आने के लिए कोई शुल्क अदा नहीं करना होता, जितना हो सके अपना भाग्य जमा करने का पुरुषार्थ अवश्य करना है।

प्रथम दिन ही बाबा पर निश्चय

उन दिनों मेरे सिर में दर्द रहता था। बेनोसाईड-25 एमजी नामक अंग्रेजी दवा की 63 खुराक 21 दिनों तक सेवन करने से कुछ आराम मिला था। पहले दिन ही जिज्ञासु परिचय प्रपत्र भरवाये जाने के समय ही मुझे स्पष्ट अनुभव हुआ कि बहन जी की सीधी दृष्टि जब-जब मेरे पर पड़ती, लगता, कोई अदृश्य शक्ति मेरे दर्द को निचोड़ कर निकालने की कोशिश कर रही है। प्रपत्र भरते समय दो-तीन प्रश्नों में उलझा तो बहन ने इतने सहज तरीके से समाधान दे दिया कि मन के भीतर शांति और स्थिरता का अनुभव हुआ। इससे लगने लगा, जीवन है तो इन्हीं ब्रह्माकुमारी बहनों का। मैंने उसी दिन से निश्चय कर लिया कि मुझे भी ईश्वरीय ज्ञान को धारण करना है।

मानो तीसरा नेत्र खुल गया

आगामी दिन से नियमित क्लास करने का समय बहन जी के साथ तय कर, लौटते समय अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने लगा जैसे कि कुबेर का खज़ाना मेरे हाथ लग गया हो। मित्र-संबंधियों को सुनाया तो उन सब ने इस मार्ग से बचने के लिए मुझे बहुत समझाया और विरोध भी किया। मैं अनगिनत सवालों में गोता लगाने लगा पर 'विघ्न ही आत्मा को बलवान करते हैं', इस स्लोगन ने मेरी आशा को उज्ज्वल और अधिक मज़बूत कर दिया। सात दिन का कोर्स करते-करते बाबा के साथ के अनुभवों की छाप से मन खिलते गुलाब जैसा हो गया। कोर्स पूरा होते ही मुझे सम्पूर्ण निश्चय हो गया कि सचमुच यह ज्ञान असाधारण है। मैं सात्विक जीवन जीने का अभ्यासी बन गया। मुरली क्लास करना शुरू किया जिससे मुझे बहुत ही खुशी मिलने लगी और मन के सारे प्रश्नों का हल मिलने लगा।

अचानक मिला प्रस्ताव

दिसम्बर, 2010 में एक दिन शाम मुरली क्लास खत्म करने के उपरांत बहन जी ने मुझे मधुबन चलने का निमन्त्रण दिया। मैंने खुशी-खुशी हाँ कर दी। फिर हरेक धारणा को अक्षरश: पालन करने का संकल्प लिया। मधुबन में दादियों एवं वरिष्ठ भाइयों के अलौकिक स्नेह के

अलावा वहां के वातावरण में नम्रता, मीठी-मीठी बातें, तनावमुक्त चलन और चेहरे देखकर हमारी सब उलझनें चुटकियों में हल हो गईं, हम गुलगुल हो गए। बापदादा मिलन में अपने पुराने दु:ख व दर्द को भूलने के लक्ष्य से बाबा को कहा, बाबा, अब तो मेरा कुछ भी नहीं, सब कुछ तेरा, अब जो डायरेक्शन देंगे, कर्मेन्द्रियां वही करेंगी। हम ज्ञान सरोवर, पांडव भवन, पीस पार्क, देलवाड़ा मंदिर, ग्लोबल अस्पताल भी गए। वहां की सत्यता और पवित्रता ने मेरी आंखें खोल दी।

अब तो बाबा में ही मेरा संसार

जीवन प्यारे बाबा की पनाह में सहज़ ही गुज़र रहा है। ईश्वरीय भाई-बहनों के साथ और सहयोग से दो बार बापदादा से मिलन करने का अवसर मिला है। आश्चर्य होता है कि परमात्म-पालना में पलने वाली आत्मा बनते ही परेशानियां, तनाव, चिंता दुम दबाकर भागने लगे हैं। सिरदर्द की कोई भी दवा लेने की अब ज़रूरत नहीं पड़ती। मैं बाबा को कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने विकारी संस्कारों को हटाकर दैवी संस्कारों की अहमियत बता दी। निमित्त बहनों का शुक्रिया अदा करते हुए अब तो मैं बाबा में ही अपना संसार देखता हूँ। ❖

उबर चुकी हूँ दुखों से

● डिम्पल सेवक, उरण (नवी मुम्बई)

मैं आत्मा बचपन से ही संघर्षों और तकलीफों का जीवन व्यतीत कर रही थी। उस समय मैं सोचती थी कि क्या भगवान ने सब तकलीफें मेरे लिए ही बनाई हैं। पिताजी की शराब पीने की आदत से हमारा पूरा परिवार बहुत दुखी था। वो आये दिन झगड़ा करते, चिल्लाते, मारते-पीटते, गालियाँ देते – ये सब नारकीय यातनायें मैंने झेली। तब से मैं प्रभु को बहुत याद करती थी। धीरे-धीरे समय बदला, शादी हो गई। वैवाहिक जीवन भी काँटों भरा ही रहा। सास के ताने, जेठानी की बातें, पति कुछ मानता नहीं था, इस संघर्ष में वैवाहिक जीवन के 15 वर्ष बीत गये।

पिछले तीन वर्षों से ज्ञान में चल रही हूँ। अब धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है। मुझे लगता है कि दुख के बाद ही सुख आता है। जीवन में इतना दुख शायद परमात्मा मिलने की खुशी के लिए ही आया था। परमात्मा का सहारा मिलने के बाद से मुझे बहुत खुशी है। हमारे चारभुजा (जिला-राजसमन्द-राजस्थान) स्थित हमारे घर में दीदी ने सेवा प्रारम्भ करवा दी है और वह घर ''बाबा का घर'' बन गया है।

मैं भी परमात्मा की कृपा से दुखों से उबर चुकी हूँ। अब ज्ञान में आने के बाद मुझे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होने लगा है। मेरी सभी धारणाएँ पक्की हैं। जीवन की इस अनमोल घड़ी में मैं आत्मा शीघ्र अतिशीघ्र अपने पिता से मिल जाऊँ, यही जीवन का लक्ष्य है। मुझे ज्ञान में आने के बाद कई बार श्रीकृष्ण के साक्षात्कार हुए हैं और सतयुग के सभी साक्षात्कार हुए हैं, तब से मुझे विश्वास हो गया है कि यह ज्ञान स्वयं परमात्मा का है।

ज्ञान में आने से पहले 'श्रीमद्भगवद्गीता' समझ में नहीं आती थी। योगी शब्द की परिभाषा तो बिल्कुल समझ में नहीं आती थी लेकिन अब तो पूरी गीता का सार समझ में आ गया है, ''वाह बाबा वाह, वाह मेरा भाग्य वाह।'' ❖

समय का महत्व

● ब्रह्माकुमार सचिन, अलीगढ़

किसी को समय देकर देर से पहुँचने पर अक्सर यह कहा जाता है, ''It is Indian time.'' अर्थात् यह भारतीय लोगों का समय है। प्रश्न उठता है कि क्या वास्तव में भारतीयों को समय की कदर नहीं है। यह निश्चय ही हकीकत नहीं है। हाँ, इतना अवश्य है कि भारत में समय की कदर न करने वाले लोगों की संख्या बहुत ज़्यादा है लेकिन यह भी किसी से छिपा नहीं है कि टाटा, बिड़ला, मोदी, अम्बानी, सिंघानिया जी जैसे लोगों ने समय का सदुपयोग करके, सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच कर विश्व में अपनी पहचान बनाई है।

हरेक के पास 24 घन्टे ही होते हैं

किसी व्यक्ति ने प्रश्न पूछा कि आज अपराध करने वालों की संख्या ज्यादा क्यों है? तो दूसरे ने उत्तर दिया कि आज लोग अपना समय खाली रह कर बिताते हैं इसलिए अपराध बढ़ते जा रहे हैं। आमतौर पर जब समय के बारे में पूछो तो लोगों का कहना होता है कि क्या करें, समय नहीं मिलता लेकिन विचारणीय विषय है कि क्या समय की सचमुच कमी है। अपने आप उत्तर आयेगा 'नहीं' क्योंकि हम सारे दिन में बहुत सारा समय बरबाद करते हैं। इस संसार में जिसने भी नाम प्राप्त किया है, चाहे धन के क्षेत्र में या धर्म के क्षेत्र में या किसी अन्य क्षेत्र में उसके पास भी 24 घण्टे ही थे। हमारे पास भी वही 24 घण्टे ही हैं लेकिन उन्होंने समय को महत्व दिया। ज्यादा दूर की बात क्यों लें, इस संस्था (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय) के साकार संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा ने जीवन में एक-एक सेकण्ड को महत्व दिया। समय को महत्व देकर वे नम्बरवन सतयुगी पदवी के अधिकारी बन गये।

कल कभी नहीं आता

अधिकतर लोगों को ऐसा भी देखा गया है कि वे अपना कार्य समय पर नहीं करते। आज का कार्य कल पर और कल का परसों पर छोड़ देते हैं लेकिन याद रहे कि इस दुनिया में कल कभी नहीं आता इसलिए जिस कार्य के लिए संकल्प (विचार) आये उसे तुरन्त कर डालो, नहीं तो वह कार्य कभी भी नहीं होगा। किसी ने ठीक कहा है कि ''शुभ कार्य में देरी कैसी''। अशुभ कार्य में देरी भले ही करें, इससे उसे करने का विचार अगले दिन तक परिवर्तित हो जायेगा।

किसी कवि ने कहा है, ''मूर्खों का दिन खाने में और रात सोने में चली जाती है''। विचार करें कि प्रतिदिन आठ घण्टे सोने वाला व्यक्ति 75 वर्षों की आयु में से 25 वर्ष तो सोने में बिता देता है। हम यदि समय का सदुपयोग चाहते हैं तो समय-सारणी बनाएँ। कार्य को पूरा करने का समय निश्चित करें। समय धन है। जैसे व्यक्ति स्थूल धन को गँवाता नहीं, ऐसे ही समय रूपी धन को भी व्यर्थ चिन्तन में नहीं गँवाना चाहिए।

समय के बारे में कहा गया है –

समय का फिक्र किया जिसने,
बना वही महान।
समय को मूल्य दिया जिसने,
बना वही मूल्यवान।।

यदि आप अपने शहर या गाँव में पीस ऑफ माइंड टीवी चैनल शुरू करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें –

मो. 8104777111, 9414151111 ई-मेल: info@pmtv.in

Free to air Peace of Mind TV Channel (Vision TV Shiksha)

C' Band Dish Settings for Cable Operator :

Frequency: **4054** ; Polarization: **Horizontal**; Symbol: **13230**

Degree: **83°**; Satellite: **INSATE 4A**

Channel: **Peace of Mind (Vision TV Shiksha)**

DTH Service : Reliance Big TV : **#171**

Videocon D2H : # **697**

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.धार- म.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सत्या बहन। **2.अंबिकापुर-** छ.ग. के गृहमंत्री भ्राता राम सेवक पैकरा को बधाई देते हुए ब्र.कु. विद्या बहन। **3.कुस्मा**-फलेबास (नेपाल)- नेपाल के भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मंत्री भ्राता छबिराज पन्त को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु. जानकी बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **4.मुंबई (मलाड)-** फिल्म निर्माता तथा निदेशक भ्राता सुभाष घई को ईश्वरीय सौगात देने के बाद ब्र.कु. नीरजा बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **5.पालनपुर-** 'अखिल भारतीय नारी सुरक्षा अभियान' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पूर्व नगरपालिका प्रमुख लक्ष्मी बहन करण, पार्षद आशा बहन रावल, ब्र.कु. डा. सविता बहन, ब्र.कु. सरला बहन तथा अन्य। **6.दक्षिण कैरोलिना-** हिन्दू मंदिर के अध्यक्ष भ्राता राम शेट्टी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. विनोद भाई। साथ में ब्र.कु. श्वेतांक भाई तथा ब्र.कु. डा. कनिष्ठा बहन। **7.फर्रूखाबाद-** चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उ.प्र. के लघुउद्योग एवं निर्यात संवर्धन राज्यमंत्री भ्राता भगवतशरण जी गंगवार, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. नीलम बहन तथा अन्य। **8.डूंगरपुर-** 'नवयुग में प्रवेश' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाजपा विधायक भ्राता देवेन्द्र कटारा तथा अन्य विधायकगण, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी बहन, ब्र.कु. पद्मा बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month & Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 7.50, Issue : March 2014.

1. ठाणे (श्रीनगर)- सिक्किम के राज्यपाल महामहिम भ्राता श्रीनिवास पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सीता बहन।

2.कोहिमा- नागालैंड के राज्यपाल महामहिम भ्राता अश्विनी कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राकेश भाई तथा ब्र.कु.रूपा बहन।

3.रायपुर- 'मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत' अभियान का शुभारम्भ करते हुए छ.ग.विधानसभा अध्यक्ष भ्राता गौरी शंकर अग्रवाल, छ.ग.आयुष एवं स्वास्थ्य विश्वविद्यालय के कुलपति डा.जी.बी.गुप्ता, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु.डा.बनारसी भाई, ब्र.कु.कमला बहन तथा अन्य।

4.भिलाई नगर- छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति भ्राता चन्द्रभूषण वाजपेयी के सम्मान समारोह में उपस्थित हैं ब्र.कु.रीटा बहन, शिक्षक भ्राता अजय सिंह राणा, न्यायाधीश भ्राता राकेश बिहारी घोरे, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य।